शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 12 | उदयपुर शुक्रवार 1 जुलाई 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

डिजाइन्ड परिधानों में रेम्प पर रखते मनहर मॉडल्स

पेसिफिक विश्वविद्यालय की प्रतिभाओं ने किया मोहित

अव्य अग्रवाल के केटवॉक एवं बाबा हनी की धमाकेदार बेजोड़ प्रस्तुति

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। पेसिफिक विश्वविद्यालय के पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन की ओर से 19 जून को मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी ओडिटोरियम में वार्षिक समारोह आयोजित किया गया। एल्युमिनेटी-2016 के नाम से यह आयोजन व्हिमसी गार्डन, ब्रिजी कलेक्शन, इण्डियन रूट्स, कैनवास, विन्टेज और किड्स कोकटेल थीम पर किया गया।

इस आयोजन की विशेष बात यह थी कि इसमें भारतीय परिधानों और खास तौर पर ट्रेण्डी पहनावे के साथ-साथ जहां व्हिमसी गार्डन में स्कर्ट के कलेक्शन में फ्लावर ट्रेंड के फ्रेबिक का बखूबी इस्तेमाल किया था वहीं कैनवास में प्लाजो और जैकेट्स, ब्रिजी कलेक्शन में साड़ी लहंगा एवं विंटेज में पुरानी थीम के परिधानों को पहने जब देश की जानी मानी मॉडल्स ने संगीत के साथ रैंप पर कैटवॉक कर उदयपुराईट्स को इनसे रूबरू कराया तो हर कोई देखता ही रह गया। समारोह में रणबांका के बाल कलाकार अव्य अग्रवाल ने किड्स राउण्ड में केट वॉक किया।

आयोजन का शुभारंभ मुख्य अतिथि सीएमएचओ डॉ. संजीव टांक, विशिष्ट अतिथि सीआई आबकारी देवेन्द्र गिरी, न्यू इंडिया इंश्योरेंस के वीरेंद्रकुमार

लोढा, शैलेन्द्र जैन, पाहेर के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, लीलादेवी अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, देवेन्द्र जैन एवं डॉ एस पी शर्मा ने किया। प्रारंभ में पेसिफिक के विद्यार्थियों ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की। अंतर्राष्ट्रीय एवं बॉलिवुड के संदीप धर्मा ने कोरियोग्राफी की। शो के डिजाइनर गगन कुमार और कीर्ति राठौड़ थे। समारोह में सबसे पहले व्हिमसी गार्डन में स्कर्ट एवं क्रॉप टोप के कलेक्शन में फ्लावर ट्रेंड के कॉटन फ्रेबिक से डिजाइन किये परिधानों के साथ मॉडल्स रैंप पर उतरे जिसमें नेट का बखूबी उपयोग किया गया था। ब्रिजी कलेक्शन में कोन्सेप्च्यूयल थीम पर साड़ी को रेडीमेड तौर पर तैयार कर हैण्डवर्क एवं डोरी वर्क से वेस्टर्न और नया लुक दिये परिधानों का प्रदर्शन किया गया। इंडियन रूट राउण्ड में भारतीय और खासतौर पर राजस्थानी परिवेश एवं विवाह समारोह में पहने जाने वाले परिधानों का प्रदर्शन किया जिसमें चटक रंगों और आधुनिक ट्रेंड को सम्मिलित किया गया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

इसके बाद बच्चों का कॉकटेल किड्स राउंड हुआ। इसमें स्टूडेंट्स द्वारा तैयार किए गए किड्स स्पेशल ड्रेसेस का प्रदर्शन किया गया। इसमें बच्चों ने उत्साहित होकर हिस्सा लिया। उसके बाद कैनवास राउंड में हैंड प्रिंट और आर्ट वर्क के उपयोग से प्लाजो और जैकेट्स ने आधुनिक पहनावे को स्टेज पर जीवंत कर दिया। इस बीच व्हिमसी गार्डन डांस, ब्रिजी कलेक्शन डांस, इंडियन रूट डांस और कैनवास डांस की बहार रही।

एक के बाद एक होती परफॉर्मेंस को देखकर दर्शक भी रोमांचित हो उठे। उसके बाद विंटेज राउंड में अठाहरवीं शताब्दी के परिधानों को खासतौर पर गाउन को वेस्टर्न रंग देकर आज के फैशन के मुताबित प्रस्तुत किया गया जिसमें नये कोंसेप्ट को पहन जब एक के बाद एक मॉडल्स रैंप पर उतरे तो समारोह स्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन के विद्यार्थियों की एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुति ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इस अवसर पर प्रसिद्ध पॉप सिंगर बाबा हनी ने आजा नि आजा बिल्लो, दमादम मस्त कलंदर और फिल्मी गाने प्रस्तुत कर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। गानों के बीच मॉडल्स के केटवॉक की प्रस्तुति भी हुई।

इसके बाद भारत की पुरूष प्रधान डिजाइनर कीर्ति राठौड़ के डिजाइन किये हुए परिधानों को प्रस्तुत किया गया जो पूरी तरह भारतीय रंग में रंगे हुए थे। राठौड़ के परिधानों को खासतौर पर शादी, संगीत, रिशेप्शन, मेहंदी जैसे अवसरों के लिए डिजाइन किया गया था। इन सारे राउंड में ज्वेलरी सेटअप और मैकअप को लेकर खासी मेहनत दिखाई दी जिसने दर्शकों को ज्वेलरी में ताजापन का अहसास करवाया। डिजाइनर गगन कुमार के निर्देशन में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन के विद्यार्थियों ने लेटेस्ट और ट्रेंडी परिधानों से रू-ब-रू करा फैशन को जीवंत कर दिया।

समारोह में पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अगवाल ने कहा कि उदयपुर में फैशन को लेकर खासा टेलेंट है। जरूरत है तो सिर्फ उसे तराशने की। उन्होंने बताया कि संस्थान के विद्यार्थियों ने इस समारोह को लेकर एक माह पूर्व ही मेहनत शुरू कर दी थी। जो आज रंग लाई है। साथ ही छात्रों ने ऐसा कलेक्शन प्रस्तुत किया जो अपनी सोच से परे है। पीआईएफटी की हमेशा यह कौशिश रहेगी कि वे विद्यार्थियों को बेहतरीन प्लेटफार्म उपलब्ध करायें। मुख्य अतिथि सीएमएचओ डॉ संजीव टांक ने पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन की टीम को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन निश्चित तौर पर प्रतिभाओं को निखारने में सहायक सिद्ध होंगें साथ ही यहां के छात्र छात्राएं फैशन के केरियर में देश और दूनियां में अपना नाम रोशन करेंगें।

चीफ एडवाइजर श्रुति सक्सेना ने बताया कि समारोह में बेस्ट स्टूडेंट्स का अवार्ड हर्षद मेनारिया, शिवानी तापड़िया, रेखा पोडल, कैलाश शेख, विजय धांधल, पूरनसिंह राजपूत और विशाखा सेठ को दिया गया। संचालन पीआईएफटी के मोहम्मद आसिफ, विशाखा सेठ, अली असगर, अनुष्का वर्मा एवं आंचल चुग ने किया।

निर्मला और प्रकाश हुए पुरस्कृत

एल्युमिनेटी-2016, फैशन शो में इंस्टीट्यूट के छात्रों ने शीतल अग्रवाल के निर्देशन में विभिन्न गतिविधियों में अपनी छाप छोड़ी। पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, सीएमएचओ डॉ. संजीव टांक ने फैशन शो के दौरान बेस्ट डिजाइनर का पुरस्कार फर्स्ट निर्मला पाटीदार और प्रकाश माली, द्वितीय रेखा पोडल, तृतीय ज्योति खाण्डेकर तथा बेस्ट डिजाइनर का पुरस्कार मेल राउण्ड में मेहर रुचि को प्रदान किया गया। शो की बेस्ट थीम व्हिमसी गार्डन को चुना गया।

बच्चों की बेस्ट डिजाइनर का पुरस्कार प्रतिभा सुखवानी, निशात परवीन तथा श्रुति परोहित को प्रदान किया गया। शो में पीआईएफटी के फेकल्टी सदस्य-डिजाइनर यशवंत जैन, मुकेश कुमार औदिच्य, आर्किटेक्ट हितेश मिस्त्री, संगीता सिंघवी, राजेश्वरी लोढ़ा, प्रकृति दीक्षित पोरवाल, सिद्धार्थ मेहता, श्रुति सक्सेना, फातिमा नाज, याशिका दलाल, राजेश शर्मा तथा कोर्डिनेटर प्रकाश शर्मा का विशेष योगदान रहा।

स्मृतियों के शिखर (12) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रानीजी : मेरे लेखन की प्रेरक

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत राजस्थानी संस्कृति की सुविख्यात लेखिका थीं जिन्होंने राजसंस्कृति पर सर्वाधिक वह लिखा जो अब तक अलिखित एवं अजाना रहा। रानीजी वह पहली लेखिका हैं जो राजकाज की मर्यादा को छोड़ खुले मुंह, खुली हवा का उन्मुक्त वातावरण पा लेखन की ओर प्रवृत्त हुईं। उन्होंने राजस्थान की सामंती संस्कृति के साथ उससे जुड़े लोकधर्मी पक्ष के गीत, गाथा, कथा, जीवनचक्र, त्यौहार, उत्सव एवं समाज के अनुरंजनपरक साहित्य को अपनी लेखनी का कद्रदान बनाया और सांस्कृतिक इतिहास को अनगिनत स्त्रोत दिये। उनका यह कार्य शिलालेखीय महत्व का है।

'सांस्कृतिक राजस्थान' नामक पुस्तक के प्रारंभ में राजपूत, रजवाड़ा संस्कृति पर अपने लेखन को लेकर रानीजी ने कहा भी- 'जो कुछ लिखा है उसका अधिकांश भाग राजपूत समाज से संबंधित है। रजवाड़े के बारे में और सामंती संस्कृति पर ही अधिक लिखा है। वह इसलिए कि इस समाज और सामंती व्यवस्था का मैं और मेरा परिवार एक अंग रहा है। मैं इसी व्यवस्था में पाली-पोसी गई। इसी के विचार, व्यवहार और आचार के संस्कार मेरे मन पर पड़े। मैंने इसका उत्कर्ष भी देखा और इसे गिरते टूटते भी। मैं इसके उज्ज्वल पक्ष की चांदनी में भी खेली हूं और इसके अंधेरे पक्ष के अंधकार में भटकी भी। मैं इसकी खूबियों को बखूबी जानती हूं और खामियों का खामियाजा भी उठा चुकी हूं।'

मेरा सबसे पहला परिचय रानीजी के लेखन से हुआ सन् 1959-60 के दौरान जब मैं बीए पास कर उदयपुर आया और भारतीय लोककला मंडल से जुड़ा। यहीं पहली बार मैंने रानीजी लिखित 'राजस्थानी लोकगीत' पुस्तक पढ़ी जिसके प्रारंभ में ही राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने रानीजी रचित साहित्य पर शुभाकामना व्यक्त करते हुए लिखा- 'राजस्थान के वीरतापूर्ण इतिहास में किसी भी लेखक को अनुप्राणित करने की क्षमता है। रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत वहीं के वातावरण में पली हैं और राजस्थान के आदर्शों तथा मर्यादा ने उनकी कल्पना और रचनाशैली को प्रभावित किया है इसीलिए उनकी गद्य तथा पद्य की रचनाओं में ओज है।'

तब रानी नाम ही मेरे लिए कई कल्पनाओं का अजूबा बोधक था। बचपन में सुनी अधिकांश कहानियां राजा-रानी से संबंधित थीं। दशामाता की नल राजा और दमयंती रानी की कहानी मैं सुन चुका था। राजा हरिश्चन्द्र और तारा रानी का नाटक अपने ही स्कूल के वार्षिक समारोह में देख चुका था और फिर अपने गांव कानोड़ के रावले में गणगौर का घुमड़ता उत्सव देखने के दौरान मेरी मां मुझे रानीजी के दर्शन कराने ले गई थी किन्तु मां का साथ छूट गया कारण कि रानीजी के महल तक जो नाल जाती थी वह बड़ी संकड़ी थी और पूरा कानोड़ ही नहीं, आसपास के गांव की महिलाएं भी रानीजी के दर्शनों के लिए उमड़ी थीं। महिलाओं की धक्कामुक्की इस कदर की थी कि उस नाल में मेरा दम घुटने लग गया और मैं बीच में ही किसी तरह अपने को बचाता नीचे उतर आया। दूसरे दिन मां ने मुझे रानीजी की सजधज पोशाक, आभूषणों की

बनठन तथा रंग-रस से पूर रूप-सौंदर्य का जो वर्णन सुनाया वह मुझे स्वप्न में देखी परी से भी हजार गुना अलौकिक गेंदा हजारी का फूल लगा।

कलामंडल में रह मुझे लेखक तो बनना ही था। मन से भी यही चाह थी कि मुझे ऐसी नौकरी मिले जहां मैं कविता कहानी किस्से लिखता रहूं। रानीजी का लेखन मेरे लिए इसलिए भी प्रेरक बना कि उसमें कल्पना की डींग नहीं होकर यथार्थ का जीवन सौंदर्य और मधुर रस था फिर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की लिखी यह पंक्ति- 'राजस्थान के वीरतापूर्ण इतिहास में किसी भी लेखक को अनुप्राणित करने की क्षमता है' मेरे लिए आदर्श बनी और मैंने अपना लेखन प्रारंभ कर दिया।

कोई लेखक कहां से प्रेरणा पाता है और अपना रचना-संसार बनाता है, कहना सरल नहीं है। अनेकों दृष्टि-पथ, अपने-पराये अनुभव और यथार्थ कल्पनाओं की संगतियां होती हैं जो किसी लेखक को प्राणवंत बनाती हैं। उन्हीं दिनों कलकत्ता से ओंकारलाल बोहरा 'विशाल राजस्थान' नामक साप्ताहिक पत्र निकालते थे जिसमें रानीजी के छपे लेख मैं बड़े चाव से पढ़ता। उनके लेख के साथ उनका चित्र भी छपता जिसमें वे काला चश्मा तथा कलात्मक साड़ी पहने होतीं। उनकी देखादेख मैंने भी लिखना शुरू किया और सर्वाधिक 'विशाल राजस्थान' ने मुझे स्थान दिया।

इस दौरान एक दिन मुझे नवजीवन के संपादक कनक मधुकर ने अपने कार्यालय में बोहराजी से भेंट कराई। बोहराजी ने बताया कि वे कानोड़ के पास के गांव ऊंठाला (वल्लभनगर) के ही हैं और रानीजी भी मेवाड़ के देवगढ़ ठिकाने की हैं। उनके इस कथन से बोहराजी और रानीजी सहज ही सन्निकट हो गये। रानीजी से जब भी मेरी भेंट हुई उन्होंने मुझे निरन्तर लिखने को प्रेरित किया जिससे मेरा उत्साहवर्धन होता रहा।

सन् 1979 में कलामंडल से मेरी एक पुस्तक 'संस्कृति के रंग' प्रकाशित हुई। इसमें तेराताली,नट, पगड़ी, तोरण, पथवारी, पड़, बड़ल्या हींदवा, भोपे, मोलेला की मूर्तियां, अग्निनृत्य, कार्तिक स्नान जैसे विषयों पर तेरह लेख संग्रहित हैं। रानीजी ने इस पुस्तक की छोटी सी भूमिका मुझे लिख भेजी जिसका अंतिम पेरा आज भी मुझे अनवरत लिखने का संबल देता है। इसमें रानीजी ने लिखा- 'संस्कृति के रंग इस वाटिका का नया पुष्प है। श्री महेन्द्र भानावत इस क्षेत्र के जानेमाने लेखक तथा शोधकर्त्ता हैं। वर्षों से इन्होंने अपने को इस कार्य में अर्पण कर रखा है। आशा है वे अपने आगामी प्रकाशनों में ऐसे और कई रंग अधिक विशद, विशेषतापूर्ण और खोजपूर्ण रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करेंगे।' तब से मैं अद्यावधि लोकजीवन की विविध वैशिष्ट्यपूर्ण विधाओं के विशद तथा खोजपूर्ण शोधानुसंधान में लगा हुआ हूं जिसके साक्षी मेरे प्रकाशन हैं।

रानीजी से ठीक से भेंट चुरू में लोकसंस्कृति शोध संस्थान द्वारा आयोजित समारोह में हुई। यह समारोह 18 तथा 19 अप्रेल 1981 को अग्रवाल बंधु सुबोध कुमार तथा गोविंद अग्रवाल द्वारा आयोजित किया गया जिसमें मुझे लोकसाहित्य के अध्ययन, समायोजन और प्रस्तुतिकरण के क्षेत्र में दिशानिर्देश करनेवाले मानक प्रकाशनों पर झवेरचंद मेघाणी स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। पहली बार यहीं राजस्थानी के मूर्धन्य कवि कन्हैयालाल सेठिया से भी भेंट हुई जिन्हें डॉ. एल. पी. टैस्सिटोरी स्मृति स्वर्ण पदक से नवाजा गया। यहीं प्रख्यात साहित्यकार विष्णु प्रभाकरजी से भेंट हुई जिनसे बाद में भी मेरा सम्पर्क बना रहा।

मुख्य अतिथि रानीजी ने ऐसे समारोह को त्यौहार की संज्ञा देते हुए कहा कि इनमें इतिहास के पन्ने उलटने के साथ हमारी संस्कृति को प्रकाश मिलता है। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि राजस्थान में दूसरी चीजों का भले ही अभाव रहा हो किन्तु यह नरपुंगव तथा नारीपुंगव पैदा करने में बेजोड़ रहा है। उन्होंने सेठियाजी को राजस्थान की प्रकृति-कृति का रस सिद्ध कवि और 'धरती धोरां री' गीत को राजस्थान प्रांत का राष्ट्रीय गीत कहा। प्रभाकरजी ने नई पीढ़ी में परम्परा से कटने तथा साधना के अभाव पक्ष पर अधिक जोर दिया। दूसरे दिन शोधसंस्थान में राजस्थानी भाषा को लेकर संगोष्ठी रखी गई जिसमें समारोह में उपस्थित राजेन्द्रशंकर भट्ट, डॉ. मूलचंद सेठिया, डॉ. कुमारपाल देसाई, डॉ. शंभुसिंह मनोहर, प्रो. भंवरसिंह सामोर, बैजनाथ पंवार, दुर्गादत्त गोस्वामी प्रभृति साहित्यकारों ने खुलकर चर्चा की।

कलामंडल से प्रकाशित रंगायन तथा लोककला नामक पत्रिका के अलावा जो भी प्रकाशन तैयार किये जाते वे रानीजी को भेजे जाते। यही नहीं, जो प्रकाशन तैयार किये जाते उसकी जानकारी, आवश्यक परामर्श, संबंधित विषय की सामग्री प्राप्त करने आदि के बारे में रानीजी से मेरा निरन्तर सम्पर्क बना रहता। 'राजस्थान की संझ्या' नामक पुस्तक प्रकाशन पर एक प्रति मैंने रानीजी को भेजी। तब वे राज्यसभा की सदस्य थीं। उत्तर में उन्होंने जो अंतर्देशीय पत्र भेजा वह इस प्रकार था-

4, रकाबगंज रोड़,
नई दिल्ली
13.5.1977

श्री भानावतजी

'संझ्या' मिली। पढ़कर बचपन की स्मृतियां उभर आईं जब हम भी 'संझ्या' मांडती थीं। साथ में कई सहेलियों की स्मृति ने कौंध डाला जो अब नहीं रहीं। आपने इस विषय पर बड़ा परिश्रम किया है। उस वक्त संझ्या मांडते समय कभी न सोचा था कि यह क्या है, क्यों है? न कल्पना ही थी कि इसके महत्व पर शोध होगा और पुस्तक प्रकाशित होगी। 'संचालकीय' में सामरजी ने ठीक ही लिखा कि सांझी के इतने गीत उपलब्ध हो सकते हैं और देश के इतने विस्तृत भू-भाग में यह मानी और मनाई जाती रही है। सोलह दिन और बालिकाओं के सोलह वर्ष के साथ इसका संबंध बड़ा वैज्ञानिक दृष्टि से आपने देखा। आपकी पुस्तक पढ़कर मेरे मन में धारणा बन गई है कि अवश्य संझ्या वही बलाइन जाति की लड़की है जो खोड्या बामण के साथ ब्याई जाने पर सामाजिक क्रूरता की शिकार बनी होगी। गीतों में अजमेर ससुराल या पीहर का गाना भी बगड़ावत गाथा से मेल रखता है। धन्यवाद

लक्ष्मीकुमारी

इसी प्रकार 'राजस्थान की गणगौर' पुस्तक के संबंध में जब मैंने रानीजी से पत्राचार किया तो जयपुर से 28 जनवरी 1981 के पत्र में उन्होंने लिखा-

श्री भानावतजी

पत्र प्राप्त हुआ। देवगढ़ की गणगौर की फोटो तो आप कभी भी खींचवा सकते हैं। आप बरजाळ आदि का उल्लेख करें तो या तो मुझे पहले बतादें या मेरा इस संदर्भ में कहीं नाम नहीं दें। कारण स्थानीय जाति विशेष क्या पता किस पोइन्ट को किस लाइट में ले ले। आप जानते हैं मैं उस क्षेत्र की विधायिका हूं, लेखिका नहीं।

लक्ष्मीकुमारी

रानीजी का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बगड़ावत नामक महालोकगाथा के संपादन का है जिससे मेरा जुड़ाव हुआ। गाथा के अनुसार अजमेर के राजा बीसलदेव चौहान के भाई मांडलजी के पौत्र बाघराव थे। लीला नामक बाल विधवा ब्राह्मणी तथा राजपुरूष हरिसिंह के दृष्टि-विनिमय से बाघराव का जन्म हुआ। बाघराव नर-सिंह रूप थे। उन्होंने बारह कन्याओं से विवाह किया। प्रत्येक कन्या से दो-दो संतान हुई। यही चौईस भाई बगड़ावत कहलाए। किसी कारणवश मित्र राणा से इनका मनमुटाव हो गया जिससे युद्ध हुआ। खारी नदी के ढावे पर इस युद्ध में बगड़ावतों ने असीम पौरूष का परिचय दिया किन्तु वे विजयी नहीं हो सके और मृत्यु को प्राप्त हुए। ये सभी बगड़ावत वीर लोक में बड़ी प्रसिद्धि लिए हैं।

इस गाथा के 655 टाइप पन्ने मैंने मुख्यत: भाषा की एकरूपता की दृष्टि से देखे। उदयपुर में 30 जनवरी 1976 को इस संबंध में दो घंटा करीब रानीजी से विस्तृत चर्चा हुई और तदनुसार 18 मार्च को अपना कार्य पूरा कर मैंने रानीजी को पाण्डुलिपि भेज दी। इस बीच उनके-मेरे पत्रों का सर्वाधिक आदान-प्रदान हुआ। रानीजी को मेरे काम से तसल्ली हुई और मुझे इस कार्य से आत्मसंतोष हुआ।

-शेष पृष्ठ सात पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

'OYO फॉर बिजनेस' मोबाईल एप्लीकेशन पेश

उदयपुर। OYO भारत के विशाल ब्रांडिड होटल नेटवर्क ने घोषणा की है कि वह बिजनेस यात्रियों की स्वयं सेवा के लिए मोबाईल एप्लीकेशन उपलब्ध करवा रही है।

OYO के फांउडर तथा सीईओ रितेश अग्रवाल, ने बताया कि OYO फॉर बिजनेस' के नाम से ज्ञात इस एप्लीकेशन से कारपोरेट यात्रियों की आवश्यकता के अनुरूप रूम्स का आरक्षण किया जा सकेगा। उपलब्ध करवाई जाने वाली सुविधाओं में फ्लैट स्क्रीन टेलीविजन युक्त एयर-कंडीशन्ड कमरे, मुफ्त वाई-फाई, कम्लीमेंटरी ब्रेकफास्ट तथा 2437 घंटे ग्राहक सेवा उपलब्ध होगी। भारत के 180 नगरों में स्थित 6000 होटलों में ये रूम्स उपलब्ध करवाए जा सकेंगे। यह विकास बड़े कारपोरेट्स, एसएमई तथा स्टार्ट-अप स्तर की 1600 कम्पनियों के साथ छह माह तक प्रयोग किए जाने के पश्चात किया जा सका। इस प्लेटफार्म के प्रयोग से कम्पनियों को अपने यात्रा सम्बधी खर्चों पर औसतन 30 प्रतिशत तक की बचत हुई।

उन्होंने बताया कि हमें भारत के प्रीमियर कारपोरेट्स, एसएमई तथा स्टार्ट-अप कम्पनियों के बिजनेस यात्रियों के लिए अपने ब्रॉंड का दायरा बढ़ाते हुए बड़ी खुशी हो रही है। हमें पूरा विश्वास है कि इसके माध्य्यम से निर्बाध आरक्षण करवाना बिजनेस यात्रियों के लिए सुविधाजनक रहेगा।

पोथीखाना

आजादी के बाद लोककलाओं का करण

डॉ. महेन्द्र भानावत लोककलाओं के ही नहीं, प्रत्युत संपूर्ण लोकजगत के ख्याति-लब्ध लेखकों में अग्रणी हैं। डॉ. भानावत ने इस पुस्तक में इस महत्वपूर्ण सवाल की ओर हमारा ध्यान खींचा है-

(1) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारी लोककलाओं की दशा और दिशा क्या है?

(2) क्या देश के आजाद होने के साथ लोककलाएं भी आजाद हुई हैं?

(3) प्रदर्शनकारी लोककलाओं के कुछ कलाकारों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग हो जाना ही क्या लोककलाओं का आजादीकरण है?

(4) प्रदर्शनकारी लोककलाओं के असंख्य परंपराजीवी कलाकार हैं जिन्हें आज भी अपनी उदरपूर्ति के लिए क्यों तरसना पड़ता है?

(5) बहुत कम पारिश्रमिक पर भी उनकी कलाओं को क्यों कोई पूछने वाला नहीं है?

(6) एक बहुत बड़े समुदाय के प्रति समुदाय की, शासन की उपेक्षा और तथाकथित लोक संरक्षण प्रतिष्ठानों की ढर्रावादी कार्यप्रणाली के चलते लोककलाकार अपने पुरखों की अनमोल विरासत को तिलांजलि देकर जिंदगी का पहाड़ा फिर एक-दो से पढ़ने पर मजबूर क्यों हैं?

डॉ. भानावत वातानुकूलित कक्ष में बैठकर लोकजगत पर कलम चलाने वाले लेखक नहीं हैं। वे यायावरी परंपरा के लेखक हैं जो लिखने से पहले देखते हैं और देखे हुए को अपने अंतस में रचाते-पचाते हैं। दुर्गम-दुरूह स्थानों की, गांव-ढाणियों की यात्राएं, जन और जनसमूह के निकट संपर्क, उनकी कलाओं को अत्मसात् करना, फिर जिज्ञासाओं और शंकाओं का शमन-सत्यापन संबंधित समुदाय से करना और तब कहीं उस विचार को आखर के माध्यम से कलम की नोक पर लाना। इतना सब करने के बाद जो लिखा जाता है वह प्रामाणिक तो होता ही है साथ ही उस क्षेत्र विशेष में रुचि रखने वाले अन्य अध्येताओं के लिए एक खिड़की भी खोलता है।

प्रस्तुत ग्रंथ में इस प्रकार के 51 आलेख हैं जिन्हें डॉ. भानावत ने समय-समय पर लिखे हैं। इन आलेखों में विषय वैविध्य दर्शनीय है। भित्ति अलंकरण, भूत-प्रेत, विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत, कठपुतली, लोक के धार्मिक अनुष्ठान, तीज-त्यौहार, पर्यावरण, लोकसाहित्य, लोक-रीति-रिवाज, लोक रचनाकार, लोककलाओं में लोक सहभागिता, शकुन, विद्यारंभ परिपाटी, जौहर, अन्न संग्रहण, लोकजीवन और पशु-पक्षी जैसे अनेक विषय इस ग्रंथ में सम्मिलित हैं किंतु इन सबका केंद्र-बिंदु लोक है।

ग्रंथ का अंतिम आलेख है- लोककलाओं का आजादीकरण। इसी शीर्षक से यह ग्रंथ भी है। इस ग्रंथ में

लेखक ने यह चिंता व्यक्त की है कि लोककलाओं के जो कलाकार भीड़ में से निकलकर कुछ आगे बढ़े गए उन्हें अपनी कला का यथोचित पारिश्रमिक तो मिल गया, वायुमार्ग से वे कई देशों की यात्राएं भी कर आए किंतु उनकी कला का गुणात्मक पक्ष निरन्तर ह्रास को प्राप्त होता रहा। लोककलाओं के नकदीकरण का एक पक्ष यह भी रहा कि अब लोककलाएं उत्स या उत्सव का समवेत प्रयास न रह कर बेची और खरीदी जाने वाली चीज बन गई। लोककलाओं के क्षेत्र में नकदीकरण की इस प्रवृत्ति को विदेशी अध्येताओं ने बढ़ावा दिया जो अर्थ संपन्न एवं साधन संपन्न होने के कारण बहुत कम समय में आधी-अधूरी जानकारी बटोर कर ले जाते हैं।

कई उदाहरण देते हुए डॉ. भानावत ने अपने इस आलेख में यह स्थापना दी है कि 'कोई घुमक्कड़ अध्येता लोककलाओं की अध्ययन यात्रा में अंतर्राष्ट्रीय देशाटन करे तो उसे यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि जहां-जहां मनुष्य हैं वहां-वहां की लोककला और लोकसंस्कृति का मूल ठहराव समानधर्मी है।' (पृ. 248)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लोककलाओं को जिस भोंडेपन के साथ प्रस्तुत किया है उससे इसका अपकर्ष ही हुआ है। डॉ. भानावत के शब्दों में- 'अब रेडियो, ट्रांजिस्टर और सिनेमा आ गए तो सारी संस्कृति ही विकृत होकर कैद हो गई है। संस्कृति के नाम पर संक्रामक संस्कृति ने जन्म लिया। टी.वी. ने तो इन्हें दूरदर्शन की बजाय क्रूरदर्शन ही दे दिया।' (पृ. 254)

लोककलाएं जब लोक से निकल कर व्यक्ति की जेब में समाने लगती हैं तब स्थिति भयावह हो जाती है। वही आज हो भी रहा है। डॉ. भानावत ने इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए कहा है- 'रावण ने जैसे गुस्से में आकर पूरी मंडोवर नगरी उलट दी थी वैसे ही हमारे कलाबाज लोग पूरी लोककलाओं को उलट-पुलट करने में लगे हैं। कला और संस्कृति के साथ दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब लोग उसकी सार्वजनिकता का दोहन कर अपनी निज की पहचान बनाना शुरू कर देते हैं। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब व्यक्ति अपने को अनाम करता हुआ समष्टि के लिए सर्वस्व हो जाता था और उसी में अपना सुख और संतोष मान बैठता था।' (पृ. 259)

उपर्युक्त उद्धरणों से जाहिर है कि हमारी लोककलाओं की वर्तमान स्थिति क्या है तथा कौन से राहु-केतु इनकी नैसर्गिक आभा को ग्रसने के लिए तत्पर हैं। इस बड़े और खौफनाक अंदेशे के चलते यह विचारणीय विषय है कि लोककलाओं और लोकसंस्कृति के उन्नयन के लिए जो कुछ किया गया वह कहां तक सार्थक रहा? यह सावल वर्तमान संदर्भों में और भी प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि राजस्थान सरकार राज्य के लिए सांस्कृतिक नीति का निर्माण करने जा रही है। देखना यह है कि इस सांस्कृतिक नीति-निर्माण में संस्कृति से जुड़े निष्ठावान लोगों का योगदान रहता है या छद्म संस्कृतिकर्मी और नौकरशाहों की जमात मिल बैठकर कोरे कागज पर संस्कृति नीति का 'दस्तावेज' तैयार करती है।

बहरहाल डॉ. भानावत द्वारा अपनी इस पुस्तक में लोकसंस्कृति को लेकर उठाए गए सवाल अकारथ नहीं जाएंगे। अपने विषय वैविध्य, भाषायी सहज प्रवाह और अनुभवाधारित चित्तोपम विवरण शैली के कारण यह पुस्तक विद्वत् समाज और सामान्य पाठक वर्ग में समान रूप से पढ़ी जायेगी। लोककला एवं संस्कृतिकर्मियों तथा शोधार्थियों को तो इस पुस्तक से शोध के कई नए आयाम भी प्राप्त होंगे।

-डॉ. भगवतीलाल व्यास

एक से एक अधिक वृतांतों वाली पुस्तक

डॉ. महेंद्र भानावत लिखित 'निर्भय मीरां' सुन गया। इन दिनों उपन्यास से भी अधिक रोचक, एक से एक अधिक वृतांतों और अद्भुत घटनाओं से परिपूर्ण बड़ी रुचिकर पुस्तक हाथ लगी। इसमें लोकजीवन भी है और लोक में प्रचलित किवदंतियों, आस्थाओं और एक से एक अधिक कौतूहल किस्सों का समावेश पाया। राजपूतों विशेषकर मेवाड़ के राणाओं के संबंध में जो जानकारी दी गई है, उनमें से अनेक तथ्य अभी तक रहस्य के गर्भ में छिपे हुए थे।

मीरां का अध्ययन करने वालों के लिए यह पुस्तक पढ़ना अनिवार्य हो गया है क्योंकि अब तक जिस मीरां को हमने जाना है उसे एक तरफ करके इसमें लिखा है। पुस्तक की कई बातें ऐसी हैं जिनकी ओर पाठकों का ध्यान दिलाना आवश्यक है। जैसे श्रीकृष्ण का राजतिलक होना, राजा बनना और जरासंध का वध जबकि यह प्रमाणित हो चुका है कि द्वारिका का शासन-तंत्र यादव सभा द्वारा संचालित होता था और कृष्ण उसके मात्र एक सदस्य थे। इसी प्रकार जरासंध को कृष्ण ने नहीं, भीम ने मारा था। यदि अमृतलाल नागर का 'खंजन नैन' नामक उपन्यास पढ़ा हो तो उन्होंने उसमें सूरदास और मीरां के मिलन का वर्णन किया है।

इसके लिए उन्होंने डॉ. भानावत ही की तरह चन्द्र सरोवर सहित सूर का सर्वाधिक स्थानों का भ्रमण किया था। नागरजी मुझसे मिले थे और मेरे 100 वर्षीय पिताजी से भी मिले थे। यह सरोवर मेरे जन्मस्थान में ही है। सूरदासजी ने मीरां को कृष्ण की बंसी कहकर संबोधित किया था लेकिन भानावतजी ने स्वामी हरिदासजी से ललिता का अवतार कहलाया है। रैदासजी की हत्या राणाजी के आदमियों ने की, ऐसा भक्ति ग्रंथों में नहीं मिलता। इसी प्रकार से और भी कई छोटी-मोटी बातें हैं जो अभी विस्तार से नहीं लिख रहा।

रही भूत-प्रेत-आत्माओं की मनुष्य के सिर पर आने की बात। वह मैंने भी अपनी आंखों से खूब देखी है परन्तु सब झूठी और एक स्वांग जैसी साबित हुई हैं। इस पर विश्वास करने वाले कभी लखपति थे लेकिन बाद में बेहाल हो गये। अब तो लोगों ने उनके थानों को भी खोद कर फैंक दिया है। लोक में यह भी कहावत है कि जब से रेल चली है ये आत्माएं भाग गई हैं। मेरे पिताजी कहा करते थे- विश्वास ईश्वर पर रखना चाहिये, भूत-प्रेत व देवी-देवताओं पर नहीं क्योंकि ये आसुरी शक्तियां हैं और मरने के बाद प्राणी को अपने ही दल में शामिल कर लेती हैं।

जो भी हो पुस्तक मजेदार है। देवकीनंदन खत्री की याद दिलाती है। शुरू करने पर इसे अंत तक पढ़ना पड़ता है, वह भी रोचकता के साथ। इस मौलिक कृति के लिए बहुत-बहुत बधाई। मुझे पुस्तक भेजी इसके लिए अनुगृहीत हूं। डॉ. भानावत की पुस्तक ही नहीं, उनका पत्र भी मैं बड़े चाव से सुनता हूं।

-गोपालप्रसाद व्यास

दो नए स्मार्टफोन लॉन्च

उदयपुर। माईक्रो मैक्स इन्फॉर्मेटिक्स ने यूनाईट 4 एवं यूनाईट 4 प्रो स्मार्टफोन लॉन्च किये है जो क्षेत्रीय भाषा आधारित कैनवास यूनाईट सीरीज़ में शामिल हो जाएंगे। ये देश के पहले स्मार्टफोन होंगे, जो विश्व के पहले क्षेत्रीय ओएस एवं भारत के दूसरे सर्वाधिक लोकप्रिय ओएस इंडस ओएस 2.0 से पॉवर्ड होंगे। इस लॉन्च के साथ माईक्रोमैक्स का लक्ष्य भारत में पहली बार स्मार्टफोन का प्रयोग करने वाले 3 करोड़ उपभोक्ताओं तक पहुंचना है। यूनाईट 4 एवं यूनाईट 4 प्रो 12 क्षेत्रीय भाषाओं के साथ विश्व का पहला ओएस है। फिंगरप्रिंट सेंसर, 5 इंच आईपीएस एचडी डिस्प्ले एवं 4 जी नेटवर्क के साथ ये फोन स्नैपडील डॉटकॉम एवं ऑफलाईन स्टोरों पर 6,999 एवं 7,999 रुपये में उपलब्ध होंगे।

तरुण पाठक, सीनियर एनालिस्ट, मोबाईल डिवाईसेस एवं ईकोसिस्टम, काउंटरप्वाईंट ने कहा कि माईक्रोमैक्स ने कैनवास यूनाईट सीरीज़ के साथ स्मार्टफोन में क्षेत्रीय भाषाओं की सपोर्ट प्रदान की। इसकी यूनाईट सीरीज़ अत्यधिक सफल सीरीज़ है, जिसकी आज तक 2.5 मिलियन से अधिक यूनिटें बिक चुकी हैं। इंडस ओएस के पिछले वर्ज़न की अपार सफलता के बाद यह 35 अन्य माईक्रोमैक्स स्मार्टफोन्स में प्रदान किया गया। माईक्रोमैक्स दो नए स्मार्टफोन यूनाईट 4 एवं यूनाईट 4 प्रो लॉन्च करके इस सफलता को अगले चरण में ले जा रहा है।

गांवों की सुध लेती संगोष्ठी पर सुधीजनों की पुस्तक

कभी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था- 'अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे।' भारत गांवों के देश के रूप में ख्याति लिए है पर आज भी गांवों की स्थिति अच्छी नहीं है। सड़कें नहीं हैं। बीजली नहीं है। पानी नहीं है। जीविका के उपार्जन नहीं हैं। तब भी परिवर्तन और विकास के डिंडोरे पीटे जा रहे हैं।

सभी गांव न सही, पर काफी बदले हैं। कस्बे शहरों और गांव कस्बों की ओर दाखिल हुए हैं। विकास की अनेक धाराओं में कुछ तो पहुंचती हैं। कुछ पहुंचने जा रही हैं। बीजली नहीं सही, उसके खंभे ही सही, लगे हैं। पानी न सही, उसका पाइप पहुंचा है। विकास की रितु आ रही है पर धीरे-धीरे। यह सब समझा है, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र उदयपुर ने और इसे और गहराई से समझने के लिए विद्वानों की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 19 फरवरी 2015 को आयोजित की गई। विषय रखा था- 'समकालीन भारत के गांव : विकास एवं परिवर्तन।' इस

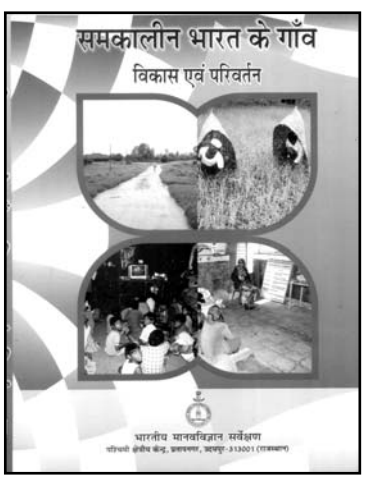

संगोष्ठी में जिन विद्वानों ने भाग लिया, शोधपत्रों का वाचन किया, उन शोधपत्रों का प्रकाशन है यह पुस्तक। पुस्तक में करीब 18 आलेख हैं जो मोटे रूप में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड आदि के गांवों की हालत और हालचाल को बयान करते हैं। कुछ आलेख जनजातियों तथा उनकी भाषा को लेकर भी वैचारिक दृष्टि देते हैं। राजस्थान में होट केक की तरह मौताणा प्रथा पर भी अच्छी पृष्ठभूमि दी गई है। मोटी साइज में पौने दो सौ पृष्ठों में दी गई सामग्री बड़ी उपयोगी है। इसके संपादन का श्रेय विभाग द्वारा किसी एक व्यक्ति को न देकर पूरा मंडल है जिसमें संरक्षक, उप संरक्षक, प्रधान संपादक, संपादक, सहायक संपादक, संपादन सहयोग आदि मिलाकर 7 नाम हैं।

- डॉ. कविता मेहता

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 1 जुलाई 2016

स्मार्टसिटी के ढांचे में उदयपुर

उदयपुर अब स्मार्टसिटी के ढांचे में ढंचित हो गया है मगर इसे जानने के लिए हमारे पास क्या है ? कैसे जाना जाय कि उदयपुर कैसा था और अब भी कैसा है ? इतिहास, साहित्य, संस्कृति, कला, स्थापत्य, खनिज, शिल्प, पुरातन आदि पचासों ऐसी आंखें हैं जिनसे उदयपुर को देखा जाना है। यहां की चप्पा-चप्पा भूमि कुछ-कुछ, बहुत कुछ कहन अपने में कैद-बंद किये है। वे बंद-पैबंद कैसे खुलें और हम वह सब अदृश्य, अकथ्य, अलेख जान पायें, पढ़ पायें, सुन और समझ पायें।

हम भूत महल के भूत्या बाबा को जान सके पर दैत्य मगरी के दैत्य को जानना बाकी है। सगसजी के विविध नाम-रूपों, गणेशजी की विविध छवियों, हनुमानजी के विविध करिश्मों को सब ही नमन करते हैं पर उनकी शौर्यजनित कथा-गाथा-जीवनी से अजाने ही हैं। कई छोटे-छोटे मिंदर, देवल, देवरियां हैं जो जाग रखती हैं। लोग उन्हें प्रतिदिन धोकते हैं पर उनका इतिहास खुला नहीं है। ऐसी ही शहर को प्रवेश देती पोलें हैं। दंडपोल, फूटा दरवाजा तो अपना कोई चिन्ह नहीं दे पाये हैं। अलग-अलग नामों से कई बस्तियां हैं- सेरी, टेकरी, पोल, तलाई, ओल, टिम्बा, घाटी, बाड़ी, गली, चौहट्टा, पुरा, मगरी, पुरी, खुर्रा, मंडी, घाट, चौक, बाग; इनका पोटला बंद है। पचास-साठ सालों में हमने कई अजाने परत जानने की कोशिश की पर वह ऊंट के मुंह में जीरा ही है। यहां तो जीरे के गर्भ से ऊंट को खोज निकालना है।

संस्था, व्यक्ति समूह जिसके हाथ जो जानकारी लगे, वे खुली करें। सभी विश्वविद्यालय मिलकर अपने-अपने जिम्मे के विषय बनायें और ज्यादा नहीं तो भी दस-दस छात्रों को शोध के लिए प्रेरित करें। जो शोध हो चुकी है उसकी सूची बनायें। अप्रकाशित शोध, लघु शोध, पट्टे, रूक्के, हकीकतें, गुटके ग्रंथ अटे पड़े हैं। उन्हें ज्ञात करें। अस्पताल जाकर इलाज कराने वाले ही रोगी नहीं हैं। उनमें भी अस्पताल से पूर्व रोगी जिन रोगों से गुजरता है उसकी जानकारी कौन दे ? इतिहास वही नहीं जो कागजों में या फिर ताम्रपत्रों में, शिलाओं में आ गया। हमारी यात्रा फोड़े से अधिक शुरू होती है, फुंसी और अलाइयों का, दरवटों का भी तो गहरा अर्थ है। नगरपालिका द्वारा वर्षों पूर्व दर्शनीय उदयपुर नाम से गाइड बुक जारी हुई थी। समूल्य जो भी आता प्राप्त कर उदयपुर को जानता, देखता, समझता। जयंती मौके पर गिरी साहब (चैतन्यगिरी गोस्वामी) ने बड़ी मेहनत से, सपंर्क कर-कर बड़ी उम्दा सामग्री संचित की और नगरपालिका की स्मारिका छपाई। उस दर्जे का गंभीर काम अब निगम को स्मार्ट होकर करना है।

कोई भी आदमी हो, चाहे नगर, धरती, वन, बसावट उसकी आंख खोलना जरूरी है। उदयपुर को स्मार्टसिटी बनाने के लिए उसकी नन्हीं आंखों में सुख देता, शोभता उजास चाहिए, चकाचौंध करनेवाला भभका और भड़ाका नहीं। यहां किसी को भड़काना नहीं है। भयरहित भ्रमण-रमण कराना है।

लिखते-लिखते यह भी कि किसी भी शहर का चौराहा उसकी जान होता है। हर चौराहा पर्यटक को प्रभा देने वाला, कुछ कहने वाला, कुछ साथ ले जाने वाला, तृप्त करने वाला, उसकी यात्रा को मंगलमय शकुन देने वाला, 'पधारो म्हारे देश' का संदेश देने वाला, पुन: आने का परचम देने वाला हो साथ ही उस शहर के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, कलाजन्य बोध को रंजित करने वाला हो।

कई चौराहों को हमने प्रस्तर शिलाएं खड़ी कर कला विहीन, कठोर दिल शिल्पों का अवाड़ा-अखाड़ा बना दिया है। हम अपनेआप में दिलचस्प न हों। लोगों की सलाह को ही शिरोधार्य सिरमौर मानें। यह लोकतंत्र है। लोक रंजित हों, शोक मंजित नहीं। इस हेतु हमें पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' रा अंक बराबर मिलर्‌या है। बींया हकीकत आ है कै मने अींकी इन्तजारी रेवे। आपकी कलम रे लिख्याड़ो संस्मरण कई स्मृतियां ने ताजगी दे देवे। केन्द्रीय अकादमी रो पुरस्कार लेकर श्री मणि मधुकर इमर्जेन्सी के कारण सीधा म्हारे कनै कोलकता आया हा। करीब दो बरस रेया। उण की कलम रो कोई सानी नई हो। उणका लिख्योड़ा कई पेज म्हारी फाइल में होसी। देखूंगा। यांही ओंकारश्री से म्हारो निजू लगाव हो। पत्राचार हो। उणरी जिद ही प्रवास में राजस्थानी सारु हुयैड़े काम नै में ग्रंथ के रूप में लिखूं। बे मेरे ऊपर ही मृत्यु से कुछेक म्हीनां पैली एक लेख लिखकर भेज्यो या कहके कि आ सरूआत है। मैं तैयार होवूं तो अन्य लोगां से लेख मंगवाकर एक ग्रंथ तैय्यार कर दूं। उण लोगां को जाणो राजस्थानी साहित्य जगत री मोटी क्षति है। शब्द रंजन रे ताजा अंक में आप किरणजी नाहटा पर लिख्यो। निधन के अेक म्हीने पैली 9 अप्रेल ने बे कलकता हा। अेक पुरस्कार समारोह में उणने न्यूता हा। म्हारै से लम्बी बातचीत हुई। शब्द रंजन पढ़कर रंगायन अर दूजी पत्रिकावां री याद ताजा हो ज्यावै। जो आप एडिट करी ही। शायद अेक को नाम पीछोला हो।

-रतन शाह, कोलकाता

'शब्द रंजन' के दो अंक मिले। अंक 6 व अंक 9 के बीच के दो अंक नहीं मिले। क्या छपे ? मैं जानता हूं कि यह बड़ा कष्ट साध्य कार्य है। फिर 'शब्द रंजन' तो और कठिन। पर आपके घर में, सब लिखने-पढ़ने वाले हैं, अत: कठिन नहीं। महेंद्रजी का मार्गदर्शन और लेखकीय सहयोग 'शब्द रंजन' में साफ नजर आता है। डॉ. कहानी भानावत कौन है ? कविता का तो पता चल गया। समाचारों का चयन व उनका निवहि जिस तरह आप कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। भाषा तो सच ही बहुत सुधरी, सुघड़ी है। ऐसा कम ही के पास होता है। अंक 9 में पूरा पहला पृष्ठ व अंदर की सामग्री देख गया। अंक 6 को भी चाट गया।

-शुभू पटवा, भीनासर

(डॉ. कहानी उदयपुर के मीरां कन्या महाविद्यालय में चित्रकला की व्याख्याता और डॉ. कविता की छोटी बहिन है। कविता बीकानेर में है।)

साहित्यिक चौपाल पर तीन तिकड़ी की यारबाजी

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

ताश के पत्तों से मैंने दुकड़ी, तिकड़ी, चौकड़ी, छकड़ी और अठड़ी तक के खेल खेले हैं। बरसों हो गये, अब कोई प्रसंग हाथ नहीं लगा।

डॉ. भानावत, छंगाणी और हरमन

छुट्टियों में दिनभर ताश ही कूटते। बिगड़ैल बच्चे पिटाई के साथ-साथ ताश से हो सत्यानाश जैसी गाली भी सुनते। ताशबाजी छूटी तो यारबाजी शुरू हुई। वह भी खूब रही। अब इस उम्र में जहां सुख के कई स्त्रोत सूख गये वहां अतीत में हुई यारबाजी की याद रस देती है पर मेरे जैसे व्यक्ति अब भी यारबाजी को प्रत्यक्षत: जीने के अधिक विश्वासी हैं हालांकि अब वैसे यारबाज मित्र भी नहीं रहे। नंदबाबू, प्रकाश आतुर, विश्वंभर व्यास, ओंकारश्री तो स्मृतिशेष ही होगये। सौ टका यारबाजी कमर मेवाड़ी की अब भी सबल बनी हुई है। वही रौनक, ताजगी और सदा बहार दिल्लगी।

उदयपुर में डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी, हरमन चौहान और मैं यदाकदा यारबाजी की चौपाल मांडते हैं। छंगाणीजी आंखों की वजह से और हरमन घुटनों की वजह से पग बाहर नहीं करते पर मिलने की याद सताती है सो 22 जून को टेंपो में बैठकर आ ही गये। अबरकी चौपाल छंगाणीजी के घर पर रखी थी सो मैं भी मधुबन स्थित उनके कुटुम्ब (कुटुम्ब अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 301) में पहुंच गया। दो घंटे कैसे बीते, पता ही नहीं चला। हमारे जलपान में छंगाणीजी का पूरा परिवार उल्लसित रहा। छंगाणीजी से मेरे जुड़ाव का प्रसंग यह रहा कि जब वे हिंदुस्तान जिंक में राजभाषा अधिकारी बनकर आये तो जैसलमेर से दीनदयालजी ओझा ने मुझे लिखा कि पुरूषोत्तमजी वहां आ रहे हैं। वे मेरे जंवाई हैं। बाई और जंवाई आपके भरोसे हैं। ओझाजी के इस लेखन-कथन ने हम परिवारों को उसी भावभूमि से जोड़ रखा है तब हम एक ही पीढ़ी थे, आज तीसरी पीढ़ी चल रही है।

हरमनजी-छंगाणीजी बोम्बे में साथ थे। शायद इसीलिए छंगाणीजी ने उन्हें भी यहां अपने पास बुला लिया। दोनों हिंदी-राजस्थानी के फक्कड़ लेखकों में अक्खड़ मिजाज लिए हैं। छंगाणीजी में लोकचित्त ज्यादा रमा हुआ है। मैंने कई लेखों में उनकी जानकारी से अपने को समृद्ध किया है। हरमनजी कवि के साथ कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक तथा व्यंग्य विधा में बड़ी दक्षता के साथ अंगद के पांव बने हुए हैं।

छंगाणीजी ने जिंक के कवि सम्मेलनों और अन्य आयोजनों में देश-प्रांत के अनेक ख्यातलब्ध हिंदी-राजस्थानी तथा उर्दू के रचनाकारों को आमंत्रित किया। अज्ञेय, जैमिनी हरियाणवी, अमृता प्रीतम, सेठ गोविंददास, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', बालकवि बैरागी, नीरज, माया गोविंद, हरिओम पंवार, काका हाथरसी, वीरेंद्र मिश्र, प्रभा ठाकुर, शैल चतुर्वेदी, निदा फाजली, हसरत जैपुरी, मोहम्मद सदीक, मधुप पांडे, सुरेन्द्र शर्मा, हरीश भादानी, मंगल सक्सेना, नंद चतुर्वेदी, प्रकाश आतुर, विश्वेश्वर शर्मा, भगवतीलाल व्यास, इकबाल सागर, आबिद अदीब, किशन दाधीच आदि अन्यानेक महारथियों का सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर मुझे भी हाथ लगा।

इनमें से कइयों की उदयपुर के रसिक समाज के लिए अलग से सम्मान-गोष्ठियां तो कलामंडल में ही आयोजित की गईं जिनका स्वागत-संयोजन करने का अवसर मुझे भी

मिला। कविसम्मेलनों में छंगाणीजी की 'ऐसा कैसे हो जाता है ?' कविता सर्वाधिक चर्चित रही। उसके कुछ छंद तो आज भी लोगों की जबान पर हैं। यथा-

ऐसा कैसे हो जाता है ?
बादल यहां गरजते हैं,
बीजली यहां चमकती है
बरसात यहां होती है
और तालाब वहां भर जाता है।
मगर हम सूखे के सूखे
होठों पर प्यास का वितान बिछाये
सूखे गले से
जल-बूंदों का गुणाभाग करते
कैसे रह जाते हैं ?
ऐसा कैसे हो जाता है ?

हम ऐसे अनेक स्मृतिरस से परिपूर्ण थाजों का माधुर्य-शहद लेते रहे। इसी बीच छंगाणीजी रंग में आ गए तो उन्होंने उधर के एक कवि खेमराज छंगाणी के काव्य-संस्मरणों से जो दिल्लगी प्रस्तुत की, हम उसी छोर को पकड़े रहे। छंगाणीजी ने बताया कि गांवों-कस्बों में भी ऐसे ठाठदार कवि हुए हैं जिनकी सुध नहीं ली गई। यदि उन्हें भी उचित मंच-वातावरण मिलता तो अग्रिम कवियों की पंक्ति में वे भी देला ही ठोकते।

खेमराजजी यों तो पोकरण के रहने वाले थे पर 56-60 के दौरान वे जैसलमेर में प्राइमरी स्कूल में अध्यापक रहे। तब जैसलमेर पर लिखी उनकी एक कविता ठेठ लोकचित्त में रंगी हुई दूर-सुदूर तक चर्चित रही। उन्हें यादकर हमें मालव कवि भावसार बा और राजस्थानी कवि माधव दरक की याद आ गई। खेमराजजी की काव्य-पंक्तियों का जायजा-जाजरिया पेश है-

आणा है न कोई जाणा है
जाणा जिसकोई जाणा है
ये अजब देश जैसाणा है।
संकड़ी गलियां डीगा घर है
गोरमेंट का गड़बड़ गाडा।
चाल रहा है आडा आडा
खावै सूर कूटिजै पाडा।

खेमराजजी हास्य के फबते फव्वारे थे। जैसलमेर से उनका स्थानांतरण पोकरण हो गया तब वहां एक अध्यापिका नियुक्ति पत्र लेकर पहुंची। उसका नाम एस. एन. सिंह था पर वह महिला थी। पहलीबार पुरूषवाची नाम और उस महिला को देख खेमराजजी सकपका गये। विनोद से बोले- मैं ही मिला क्या, आप पुरूष होकर महिला वेश में आई हैं पर मैं आपके चक्कर में आने वाला नहीं हूं। लाख समझाने पर भी खेमराजजी नहीं समझ पाये। कभी नियुक्ति पत्र देखते, कभी उस महिला को और यही कहते, मेरे साथ मजाक कर रहे हो। आदमी हो और औरत वेश में आई हो। मैं भी कोई कच्ची गोली नहीं खेला हूं जो मूर्ख बन जाऊं।

महिला के लाख स्पष्टीकरण पर भी खेमराजजी नहीं माने। अंत में वे एसडीओ के पास गये। पहले तो नाम देख वे भी सकपका गये पर अंत में जब मूल प्रमाणपत्र देखे तो उन्हें विश्वास हो गया लेकिन खेमराजजी ने एसडीओ से कहा कि मैं अपने पर कोई रिस्क नहीं लेना चाहता। फिर इस पत्र में श्री को काट नहीं रखा है। इससे भी मेरा विश्वास पक्का हो रहा है कि यह नाम किसी पुरूष का ही है। ऐसी स्थिति में एसडीओ ने भी मौन धारण किये रखा।

नतीजतन दूसरे दिन वह महिला जैसलमेर गई और नियुक्तिपत्र में सुधार कराकर लाई तब ही खेमराजजी ने उसे अपने वहां जोइन करने दिया। यह घटना जिस-जिस ने भी सुनी उसे हंसी तो आई पर खेमराजजी को ही सच्ची प्रशंसा मिली और लोगों ने भी पहलीबार किसी महिला का ऐसा नाम सुना। खेमराजजी का निधन हुए चार-पांच वर्ष ही व्यतीत हुए मगर उनकी कविताएं और उनके रसिक मन को यादकर अनुरंजित होने वालों की संख्या कम नहीं है।

आस्था का युग्मराग

रोटी तेरे रूप अनेक

-डॉ. मालती शर्मा-

आज के मंगल, शनि और चन्द्रमा पर जाने वाले समय और स्थान की दूरियां जीतने वाले यानों, उपग्रहों के अपूर्व आविष्कार अपनी जगह हैं पर इस विश्व में 'रोटी' से बड़ा आविष्कार आजतक नहीं हुआ।

हमारी बहुत सारी खाने की चीजें एक हाथ से बन जाती हैं जबकि रोटी बनाने को दोनों हाथ, युग्मराग के दोनों तार लगते हैं। ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूं, चना की हाथ की बनी रोटी ब्रज क्षेत्र में 'पनपथी' कहलाती है। रोटी को बेलने का बेलन कई अर्थों का प्रतीक है। स्त्री के रौद्र रूप और व्यंग्य चित्रों में उसके हाथ में बेलन बता दिया जाता है जो मिसाइल का प्रतीक होता है। विश्वभर में रोटी तमाम खाने पीने की चीजों तथा व्यंजनों में सिंहासन पर बैठी महारानी है। दिहाड़ी मजदूरों तथा कामगार वर्ग के व्यक्तियों की पोटली में रोटी के साथ प्याज का मेल सोने में सुहागा होता है।

विश्व का आधे से अधिक हिस्सा चावल खाने वाला है पर तीन वक्त के मुख्य भोजन में एक वक्त का भोजन, रोटी के बिना पूरा नहीं होता। चावल खाने वाले तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल में भी सुबह दोपहर के नाश्ते में दोसा, उत्तपा के रूप में रोटी रहती है। देश के लगभग सभी प्रान्तों में, पर्व, त्यौहार, उत्सवों में रोटी का ही रूप 'पूरी' एक विशेष व्यंजन है। हिन्दीभाषी प्रदेशों में तो कभी दावतों का मतलब ही लड्डू के साथ पूरी-साग हुआ करता था। महाराष्ट्र में गुड़-चने का पूरनपरी 'पूरनपोळी' हर पर्व-त्यौहार-उत्सव के व्यंजनों की रानी है। मेहमान की मेहमानी है। देवी-देवताओं का नैवेद्य है। महाराष्ट्र की रोटी पूरनपोळी को आज भी कोई दूसरा व्यंजन उसके सिंहासन से नीचे नहीं उतार सका है।

हर देश के प्रान्तों, जनपदों, अंचलों, ग्रामों की रोटी के विविध नाम-रूपों-प्रकारों के असंख्य नाम-रूप रोटी, फुलका, लुचइयां, मांडे, सुहार दशमी, भाखरी, चपाती, उड़ीनुच्चु, साटोश्यां हैं। हिन्दी भाषी प्रदेशों के तीनों समय के मुख्य भोजन में रोटी और उसके अन्य रूपों का ही राज है। एक दूसरे प्रान्तों से जितना आदान-प्रदान रोटी का हुआ है अन्य किसी का नहीं।

मेरे मंझले भाई, पृथ्वी मिसाइल के निदेशक डॉ. वी. के. सारस्वत को 'सिन्धी रोटी' बहुत प्रिय थी। रोटी अपने आकार की गोलाई में पूरा ब्रह्मांड है। रोटी की दो पर्तें धरती और आकाश हैं। दोनों के बीच बसा यह लोक है जो रोटी का स्वाद ले भूखा पेट भरता और रोटी को भगवान बनाता है। मराठी भाषा का 'आदी पोट्रोबा, मग, बिठोबा' और हिन्दी का 'भूखे भजन न होय गोपाला' मुहावरा रोटी के महत्व को प्रतिपादित करता है। चौकोर रोटी, सृष्टि की चारों दिशाओं की प्रतीक है। लगभग पूरे विश्व में खाई जाती 'बैड' भी चौकोर रोटी ही है। उत्तर भारत, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब में तिकोनी रोटी परांठा, सिन्ध की तिकोनी रोटी सिन्धी रोटी, त्रिगुणात्मक प्रकृति के तीन गुण, सतो, रजो, तमो, मनुष्य के मस्तिष्क की तीन अवस्था- जागृति, स्वप्न तथा तुरीय है।

हमारे खाने के सभी व्यंजन, पकवान, मिठाइयां, नमकीन, समोसा, कचौरी, खीकरी, पापड़ी, गुझिया, टिकिया, चढ़ियां, बड़े, दही बड़े या तो गोलाकार हैं या अर्धगोलाकार और या फिर तिकोने। कुछ नमकीन पकवान लम्बे भी हैं जो सृष्टि के युग्मराग के लम्बे तार ही हैं। पकवानों को बनाते-सेकते समय कढ़ाई में छुन-छुन में इनका युग्मराग ही बजता है। गूंजता है। रोटी के, फुलके के, दो पर्त फूलने पर युग्मराग का स्वाद होता है।

दोपहर शाम, अपने काम निबटाकर श्रमिक वर्ग मालिकों के यहां रोटी लेने जाता था। मेरे कानों में आज भी पुनियां मेहतरानी की आवाज गूंजती है- 'बाई! रोटी दे देउ।' साग भाजी चटनी, नमक, प्याज, मिर्च कुछ भी नहीं तो पानी के घूंट के साथ खाकर एक बड़ा वर्ग अपनी उदरपूर्ति करता है।

खाद्यान्नों में रोटी ही सबसे अधिक अनाजों की बनती है। वह अपने वर्तुल, त्रिकोण और चौकोर आकारों में सारे अनाजों, गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, मक्का, बाजरा आदि से मेल मिलाप कर सभी को अपने में समेट लेती है। मेरी सासू मां बताती थीं कि उनकी चाची उन्हें गोबर और मिट्टी सान कर हाथ की रोटी बनाने का अभ्यास कराती थीं। रोटी बेलना ससुराल आई नई बहू की पाक कला का परीक्षण था।

पापड़ बेलने की कठिनाई पर तो हमारी भाषा में मुहावरा है पर रोटी बनाने की कठिनाई, उसकी किल्लत पर कोई मुहावरा क्यों नहीं ? जबकि चुपड़ी हुई दो रोटी मिलने के आनंद पर मुहावरा है- 'चुपड़ी और दो दो!' 'चंदिया रोटी, मुंह बरोसी'; मुझे अपनी एक सहेली के बच्चे की बात याद आ रही है जो रोटी बनाने में देर होती देख भूख लगने पर कहा करता- 'मौसी आम अमरूद सेब की तरह रोटी का पेड़ क्यों नहीं होता कि उससे जब चाहें रोटी तोड़कर खा लें।'

कोई वक्त था जब रसोई में पहली रोटी गाय की और पीछे की रोटी कुत्ते की बनती थी। गाय की रोटी पर भोजन सामग्री और घी-शक्कर रख उससे टुकड़े तोड़ चूल्हे में डाल बैसान्दुर किया जाता था। किसी भी घर में कभी तीन रोटी नहीं बनती न तेरह ही। जरूरी हो तो पीछे तवे पर छोटी सी टिकरी डाल चार चौदह की संख्या पूरी करते हैं।

इसी तरह तीन रोटी बचने पर कओरदान कठउआ में तीसरी रोटी आधी कर संख्या चार कर दी जाती है। मैंने कई पुरखिनों से ऐसा करने का कारण पूछा तो उनका उत्तर था- इससे परिवार तीन तेरह हो जाता है। सबसे पीछे सिकी रोटी खाना निषिद्ध था। ऐसा कहा जाता है कि पिछली रोटी खाने से बुद्धि 'पिछाई' हो जाती है। मर्दों को पिछली रोटी कभी भी खाने को नहीं दी जाती थी।

पूरे महाराष्ट्र में खाने की थाली में कभी भी पूरी रोटी ; पोळी नहीं परोसी जाती। उसके चार टुकड़े जो कि स्वाभाविक रूप से तिकोने होते, किए जाते हैं और एक-एक दो-दो करके परोसे जाते हैं। कभी चार भी, पर कम ही। इसके पीछे किसी भी व्यक्ति के पूरी रोटी, खासकर बच्चों के न खा पाने की बात दीखती है। खिलाने का आग्रह भी पूरा होता है। वैसे भी महाराष्ट्र की पोळी भाखरी बड़ी होती है। पूरी रखने पर थाली भर जाती है।

तीर्थंकर सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्पुरुष

- डॉ. दिलीप धींग

सन्तों के आगमन से गृहस्थजनों के आध्यात्मिक जीवन को बल मिलता है। हर व्यक्ति में जप-तप, त्याग-प्रत्याख्यान तथा व्रत-नियम करने की भावना बनती है। ज्ञान-ध्यान और आत्म-साधना का एक सकारात्मक, सहयोगात्मक और सहकारितापूर्ण वातावरण बन जाता है। जो ऐसे वातावरण से जुड़ते हैं, उनके जीवन के अनेक अशुभ टल जाते हैं या वे शुभ में परिवर्तित हो जाते हैं।

जिस धरती पर सन्तों का प्रवास, विचरण और विहार होता है, वह धरती तथा वहाँ का वातावरण सकारात्मक हो जाता है। तीर्थंकर भगवान के बारे में कहा ही जाता है कि वे जहाँ-जहाँ विचरण करते हैं, वहाँ रोग, महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उपद्रव आदि शान्त-उपशान्त या नष्ट हो जाते हैं; वातावरण अनुकूल बन जाता है। आगमों में तीर्थंकर परमात्मा को भी श्रमण, मुनि, अनगार, भिक्षु, ऋषि, महर्षि आदि कहा गया है। एक दृष्टि से नवकार महामंत्र का पहला पद श्रमणत्व का बोधक भी है। दूसरे पद को छोड़कर नवकार के चार पदों में विभिन्न श्रेणियों में साधुत्व को भी नमस्कार है। इस तथ्य में मुनित्व और सन्तत्व की महिमा परिलक्षित होती है। तीर्थंकर अपने कालखण्ड के सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्पुरुष होते हैं। उनका अलौकिक/अचिन्त्य प्रभाव उनके समय में तो होता ही है, उनके बाद भी होता है। उनकी वाणी और उनके नाम-सुमिरन का प्रभाव भी हर कालखण्ड में होता है। साधु-साध्वी ऐसे तीर्थंकर परमात्मा और उनकी महान परम्परा के अनुगामी होते हैं। निश्चिंत ही, उनका भी अपना प्रभाव होता है। उनके त्याग, संयम, तप, साधना आदि का प्रभाव होता है। यही वजह है कि श्रमण और श्रमणियों के आगमन से भी वातावरण अनुकूल बन जाता है।

तीर्थंकर भगवान ने चतुर्विध संघ की स्थापना की। चार तीर्थ की स्थापना की। उन्होंने साधु-साध्वी को तीर्थ कहा तो श्रावक-श्राविका को भी तीर्थ कहा। तीर्थ यानी जो तिराये। तीर्थंकरों की प्रत्यक्ष अनुपस्थिति में उनके चार तीर्थ ही जिनशासन को आगे बढ़ाते हैं। सन्तों का प्रवेश और प्रवास किसी भी नगर के लिए तब जाकर अधिक प्रभावशाली बन जाता है, जब वहाँ वे निवासी तीर्थ-तुल्य श्रावक-श्राविका और गृहस्थजन स्वयं अपनी साधना करते हुए सन्तों की साधना में सहभागी बने। संघीय व्यवस्था का यही महत्व है कि इसमें एक और एक दो नहीं, अपितु ग्यारह हो जाते हैं।

जीवाजीवाभिगम में उल्लेख आता है कि साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका की साधना, व्रत-नियम, जप-तप, ब्रह्मचर्य आदि से निसृत सकारात्मक ऊर्जा की शक्ति के कारण से ही सागर अपनी मर्यादा में रहता है तथा अन्य आपदाएँ नहीं आती हैं। सन्तों के आगमन से गृहस्थजनों के आध्यात्मिक जीवन को बल मिलता है। हर व्यक्ति में जप-तप, त्याग-प्रत्याख्यान तथा व्रत-नियम करने की भावना बनती है। कोई स्वयं साधना में संलग्न हो जाते हैं तो कोई दूसरों का सहयोग करते हैं तथा कुछ धर्म की दलाली करते हैं। इस प्रकार ज्ञान-ध्यान और आत्म-साधना का एक सकारात्मक, सहयोगात्मक और सहकारितापूर्ण वातावरण बन जाता है। जो ऐसे वातावरण से जुड़ते हैं, उनके जीवन के अनेक अशुभ टल जाते हैं या वे शुभ में परिवर्तित हो जाते हैं।

अनेक प्रसंग सन्तों के पदार्पण अथवा प्रवास के सुप्रभाव से जुड़े हुए हैं। जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज जब डूंगला (चित्तौड़गढ़-राजस्थान) में विराजमान थे, तब कुछ डाकू डूंगला पर डाका डालना चाहते थे। वे डूंगला के निकटवर्ती ग्राम बिलोदा तक पहुँचे और उन्हें डूंगला में जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी के विराजमान होने का पता चला तो उन्होंने डाका डालने का विचार त्याग दिया। उन खूंखार डाकुओं ने केवल विचार ही नहीं त्यागा, अपितु हमेशा के लिए इस कुधंधे को छोड़ दिया।

संतों का प्रभाव :

जैन इतिहास में भी एक ऐसी घटना का उल्लेख मिलता है। उन दिनों आचार्य हेमचन्द्र के गुरु आचार्य देवचन्द्रसूरि नागपुर में विराजमान थे। गुजरात के राजा सिद्धराज जयसिंह ने नागपुर पर आक्रमण करने की योजना बनाई और आक्रमण के लिए नागपुर के बाहर तक पहुँच गये। जब उन्हें पता चला कि नागपुर में आचार्य देवचन्द्रसूरि विराजमान हैं तो वे बिना आक्रमण किये अपनी सेना को लेकर पुनः गुर्जर-प्रदेश लौट गये।

आचार्य हुक्मीचन्दजी महाराज के जीवन की घटना है। एक ग्राम में महामारी फैली हुई थी। उस समय चिकित्सा सुविधाएँ भी अपर्याप्त थीं। आये दिन थोक में लोग मर रहे थे। स्वस्थ आदमी को प्रतिपल संक्रमण का खतरा बना रहता था। ऐसे ग्राम में भी आचार्यप्रवर बिना किसी भय के पधारे।

उस गाँव में उनके प्रवेश के बाद एक भी व्यक्ति अकाल मृत्यु का ग्रास नहीं बना। कर्नाटक गजकेसरी तपस्वीराज गणेशलालजी महाराज के जीवन में भी इस प्रकार की घटना मिलती है। जैन सन्तों की साधना के अचिन्त्य प्रभाव के ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग इतिहास और जनश्रुतियों में पढ़ने-सुनने को मिल जाते हैं।

सन्तों के प्रवेश और प्रवास को हमें उसी उम्मीदभरे और अनुकूल एहसास के रूप में लेना चाहिये। मानव-जीवन की सार्थकता बोध तथा अहिंसा का ज्ञान जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। सन्तों के आगमन से यदि यह बोध व ज्ञान अधिक से अधिक जनों में जागृत होता है तो समाज व देष के लिए यह वरदान है।

सन्तों के प्रवेश और प्रवास को अधिक फलदायी व यादगार बनाने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर आध्यात्मिक संकल्प किये जा सकते हैं। राजकीय स्तर पर अहिंसा की घोषणा करवाई जा सकती है। विशाल मेवाड़ रियासत (वर्तमान में दक्षिणी राजस्थान) के अन्तर्गत आने वाले किसी भी ग्राम या नगर में जब जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी का प्रवेश और विहार होता था, तो उन दिनों में वहाँ शासकीय स्तर पर अगता (अहिंसा-दिवस) का अनुपालन होता था। सभी बूचड़खाने और मदिरालय कानूनन बन्द रहते थे। जैन दिवाकर के समय में अन्य रियासतों, राजाओं, जागीरदारों और नवाबों की ओर से भी इस आशय के राजकीय आदेश प्रसारित होते थे तथा उनका पूर्ण अनुपालन होता था। वर्तमान में भी अहिंसा के सत्संकल्प के साथ सन्तों की अगवानी की जा सकती है। श्रेष्ठ परम्पराओं तथा परम्परा की श्रेष्ठताओं को अपनाना और उन्हें आगे बढ़ाना सबका पुनीत कर्त्तव्य है।

कान्यो मान्यो

हर गांव में परिचय पट्ट लगे

कान्यो का इस बार मुंह उतरा हुआ लगा। कुछ देर तो सुबक-सुबक आंसुड़ा ढरकाता रहा फिर बोला- कसौटिया गांव को क्या पलीता लगा कि सबके सब गूंगे, बहरे, अंधे नजर आये। उनके कान पर जूं तक नहीं रेंगी। इतनी बेशर्मी घटना घटने पर भी गाय का जाया कोई सांड नहीं निकला जिसने हल्का सा टांडा-टांडी ही किया। मान्यो उसकी बात सुनते खुद सकपका गया। बोला- कसौटिया ने म्हारो गांव आं-पां। कूकड़ो वठै बोले तो सुबै अठै वै। एक हेला हांटे मुसीबत में सब आवे-जावे।

कान्यो बोला- मने भी अणीज वात रो अचम्भो है। नातेदार दोई धणी लुगाई ने हाव नागा कर रूंकड़ै बांध दीधा। वी गिड़गिड़ाया, पगै पड़्या, आड़्यां खादी तोई नाड़काट्या नै दया नी आई। वां अस्यो कई जुलम कीधो। अस्यो तो राजा ई नीं दंडै। ई डोपीरा कुण वै जो वांनै सजा दे अर गामवाला री सगळी हमझदारी भणाई लिखाई बकरी चरगी जो कान में तेल डार छाती माथै मोटा भाटा मेल सैन करता र्‌या।

मान्यो बोला- कोई हमचो देतो-तो पुलिस आवती। सरकारी अधिकारी तक लुप-लुप करतारिया। वाहरे कसौट्या रा लोगां। आखी दनियां में थाणो नाक नीचे व्यौ। बड़ेरा केता आया, डरणो चोरी ऊं, अन्याय ऊं। बाकी कणीऊं नी डरणो। बेमतलब हांप री बांबी में हाथ नी नाकणो। कानून रा हाथ लांबा है। अबै भुगतणो भारी पड़सी अणा कानून हत्थांमांय लीधो अर करतब रो निभाव नी कीधो।

कान्यो बोला- आगे री सुध लो। मान्यो सला दीधी के गांव रे नुक्कड़ माथै परिचै पट लागै जणी माथै खास-खास जाणकारी अर फोन नं. दरसाया जावे ताकै कणी भी कोटैम री वगत री सूचना कोई भी फटाफट दे सकै। जो वेइग्यो वीनैं भुगतो अर आगे री सुध लो।

दानवीरों के लिए भामाशाह प्रेरक एवं प्रासंगिक

उदयपुर। भामाशाह ने कठिन समय में प्रताप के राजकोष को ही उन्हें समर्पित किया अपितु अपने अर्जित धन को भी उनको समर्पित कर पूरे विश्व में दानवीर के रूप में जो ख्याति अर्जित की उससे अनेकातिक लोगों ने प्रेरणा लेकर अपनी धन-सम्पदा को जनहितार्थ दान कर दिया। यह परम्परा आज भी यथावत है इसीलिए भामाशाह आज भी हमारे लिए प्रेरक एवं प्रासंगिक बने हुए हैं।

भामाशाह की 469वीं जयंति पर महावीर युवा मंच द्वारा भव्य शोभायात्रा निकाली गई। उससे पूर्व सर्व समाज ने निगम प्रांगण स्थित महाराणा प्रताप की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्प वर्षा की। शोभायात्रा को महापौर चन्द्रसिंह कोठारी तथा समाजसेवी किरणमल सावनसुखा ने झण्डी दिखाकर रवाना किया।

शोभायात्रा बापूबाजार, देहलीगेट, अश्विनी बाजार होती हुई भामाशाह सर्कल हाथीपोल पहुंची। शोभायात्रा में पांच अश्व एवं वाद्ययंत्र युक्त वाहन देशभक्ति से ओतप्रोत गीतों से गुंजायमान थे। तत्पश्चात् के सरिया दुप्पट्टे एवं मेवाड़ी पगड़ी पहने 200 दुपहिया चल रहे थे।

सुसज्जित जीप में भामाशाह की तस्वीर के पीछे 13 झाकियां थीं। महाराणा प्रताप की जय-जय, भामाशाह की जय-जय जैसे नारे लगाते चल रहे थे। मंच की महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष मंजुला सिंघवी, सदस्य मधु सामर, शुभा हिंगड़, मधु सुराणा, रश्मि पगारिया, नीता खोखावत, सीमा चंपावत, प्रवीणा पोखरना, रंजना भानावत, प्रमिला पोरवाल, रानु भाणावत आदि लहरिया पहनावे में शोभित थीं।

भामाशाह सर्कल पर मंजुला सिंघवी के नेतृत्व में हल्दीघाटी मिट्टी मिले कुमकुम का तिलक कर सबका स्वागत किया गया। मंच के अध्यक्ष मुकेश हिंगड़ तथा मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि इस वर्ष मंच भामाशाह फाउण्डेशन के सहयोग से सर्वसमाज के दानदाताओं के भामाशाह सम्मान के साथ व्याख्यानमाला आयोजित करेगा।

समारोह में महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, जैन सोश्यिल ग्रुप के आर.सी. मेहता, समन्वयक मोहन बोहरा, विधायक फूलसिंह मीणा, प्रेमसिंह शक्तावत, किरणमल सावनसुखा, तेजसिंह बांसी, भीमलदास तलरेजा, प्रभुदास पाहुजा, तख्तसिंह शक्तावत, सुन्दरलाल भाणावत, प्रतापराय चुघ, गणेश डागलिया, हरीश राजानी, हीरालाल कटारिया, तेजसिंह बोल्या, गजेन्द्र भंसाली, मुरली मनोहर बंधु सहित विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि-पदाधिकारी सम्मानित किये गये।

समारोह में मंच के महामंत्री नेमी जैन, संयोजक अर्जुन खोखावत, सहसंयोजक कमल कांवड़िया, सदस्य कुलदीप नाहर, आलोक पगारिया, राजेश चित्तौड़ा, निर्मल पोखरना, नीरज सिंघवी, जयेश चंपावत, स्नेहदीप भाणावत, अरविन्द सरूपरिया, विक्रम भण्डारी, भंवरलाल पोरवाल, बसंत खिमावत, ओमप्रकाश पोरवाल, तुक्तक भानावत, अजय मेहता, राजेश जैन, रमेश सिंघवी, मनोज मुणेत, जीवनसिंह पोरवाल, भगवती सुराणा, सतीश पोरवाल, सुनील पगारिया आदि उपस्थित थे।

पानी-पानी करते नेताजी

-हरमन चौहान-

एक नेता
जहां भी जाता, वहां हमेशा
जल समस्या पर ही भाषण देता।
कहता-भाइयों,
हमने बड़े-बड़े बांध बनवाए,
बड़े-बड़े सरोवर बनाए,
तालाब, एनिकट बनवाए।
लेकिन आजादी के बाद भी
जल समस्या
वैसी की वैसी बनी हुई है,
वर्षा में नदी का जल
समंदर में बह जाता है,
हम मजबूर हैं।
क्या करें?
एक श्रोता बोला-
जनता का पैसा सारा
नेताओं की जेब में बह जाता है।
हम क्या करें?
नेता को भाषण देते समय
बड़ी प्यास लगती।
सामने भरी हुई ग्लास रहती।
वे पीकर कहते-
तुम मुझे वोट दो,
मेहनत का खून दो,
मैं तुम्हें गांव-गांव पानी दूंगा।
भाषण उत्तेजना भरा था,
लोग उत्तेजित हो गये।
लोगों ने उन्हें बुरी तरह
घायल करके
पहले पानी पिलाया,
फिर
अस्पताल ले जाकर खून दे दिया।
लेकिन गरीबों का खून,
खून नहीं था, शुद्ध मिलावटी था।
नेताजी पानी-पानी करते मर गये।

चिंगल्स अब 'कोला' स्वाद में

उदयपुर। देश के लोकप्रिय मिनी च्यूइंग गम ब्रांड पास-पास चिंगल्स की टोली में अब नया और अनोखा 'कोला' स्वाद भी शामिल हो गया है। उपभोक्ताओं की राय के आधार पर तैयार किया गया चिंगल्स, अब लोगों के बीच अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए कोला के स्वाद वाले मिनी च्यूइंग गम ले कर आया है। युवाओं को खासतौर पर ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया चिंगल्स कोला, फिलहाल सिर्फ एक रुपये के पाउच में उपलब्ध है। इस नए स्वाद के जिपर और फ्लिपटॉप पैक बाजार में जल्द उपलब्ध होंगे। चिंगल्स कोला के आने से, जिंदगी और हँसी-मजाक के खुशगवार पलों से भरपूर तथा दोस्तों और परिवार को करीब लाने वाले ब्रांड चिंगल्स को अपनी स्थिति मजबूत करने में मदद मिलेगी। इसे पास-पास ब्रांड के अंतर्गत बाजार में उतारा गया है, जो घनिष्ठता और मित्रता का प्रतीक है। इसका 'च्यू अ कोला' जुमला, इसके बेहद लोकप्रिय कोला स्वाद को बखूबी दर्शाता है। डी.एस. समूह ने 'पास-पास चिंगल्स' के साथ कन्फेक्शनरी उद्योग में कदम रखा था। मजेदार च्यूइंग गम 'चिंगल्स' की मौजूदा शृंखला में मिंट, नींबू, सौंफ और टूटी फ्रूटी जैसे स्वाद मौजूद हैं जो एक रुपये के पाउच, पांच रुपये के जिपर और दस रुपये के फ्लिपटॉप पैक्स में उपलब्ध हैं।

स्वच्छता का संदेश देने वाली लघु फिल्म में अव्य अग्रवाल मुख्य किरदार में

उदयपुर। अपनी खूबसूरती के लिए विश्व प्रसिद्ध उदयपुर इन दिनों फिल्मों की शूटिंग का डेस्टिनेशन बनता जा रहा है। देश में इन दिनों चल रहे स्वच्छता

अभियान से जुड़ी प्रेरणादायी शोर्ट फिल्म की शुटिंग उदयपुर में की जा रही है। स्वच्छता का संदेश देने वाली इस लघु फिल्म में सड़क पर कचरा फेंके जाने के बाद होने वाली गंदगी के बारे में बताया गया है। इसमें एक छोटा सा बच्चा अनूठे तरीके से आम जन को स्वच्छता का संदेश देता है। शोर्ट फिल्म का फिल्मांकन सेवाश्रम क्षेत्र में किया गया है। इसका निर्देशन चिन्मय भट्ट कर रहे है साथ ही असिस्टेंट लोकेश पालीवाल है। मुख्य भूमिका में पेसिफिक समूह के आशीष अग्रवाल के बेटे अव्य अग्रवाल हैं, वहीं सावन दोसी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। फिल्म को जुलाई के दूसरे सप्ताह में सोशल मीडिया के माध्यम से जनता तक भेजा जायेगा। निदेशक चिन्मय भट्ट ने बताया कि फिल्म देखने के बाद सड़क पर कचरा फेंकने वालों को इस बात का अहसास होगा कि किस तरह से उनकी छोटी सी नजरअंदाजी से स्वच्छता बिगड़ती है साथ ही उन्होंने अव्य अग्रवाल के अभिनय की जमकर तारिफ की।

यू मुंबा टीम के खिलाड़ियों ने किया ज़ेनॉन ग्राहकों को सम्मानित

उदयपुर। अपने ग्राहक केंद्रित पहल को आगे बढ़ाते हुए टाटा मोटर्स ने ज़ेनॉन ग्राहकों के लिए यू मुंबा टीम के खिलाड़ियों के साथ विशेष मेल-जोल कार्यक्रम का आयोजन किया। इस समारोह में भारतीय कबड्डी टीम के पूर्व उपकप्तान राकेश कुमार, यू मुम्बा टीम के स्टार खिलाड़ियों सुरेंद्र नाडा और नितिन कुमार ने शहर में टाटा मोटर्स ज़ेनॉन के ग्राहकों को सम्मानित किया।

टाटा मोटर्स के बिज़नेस हेड-एसएसीवी, पिकअप्स एवं एलसीवी कार्गो, वाणिज्यिक वाहन कारोबार अनुराग दूबे ने कहा कि हमें टाटा मोटर्स डीलरशिप में टीम यू मुम्बा की मेजबानी करते हुए खुशी हो रही है। आज वास्तव में हमारे ग्राहकों के लिए खुशी का दिन है, जिन्हें टीम के स्टार खिलाड़ियों द्वारा सम्मानित किया गया। टाटा मोटर्स डीलर नेटवर्क और ग्राहक अनुभव को समृद्ध बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और प्रो कबड्डी लीग के सीजन 4 के लिए टीम यू मुम्बा के साथ हमारा गठजोड़, इस दिशा में कंपनी द्वारा की गई एक और पहल है।

ज़ेनॉन ताकत और मजबूती का प्रतिनिधित्व करता है, जो टीम यू मुम्बा के साथ हमारे गठजोड़ से और प्रतिबद्ध होता है। हम इस सीज़न के लिए सभी खिलाड़ियों को अच्छा प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं देता हूं और आगे भी ऐसे कई सफ्ल गठजोड़ के लिए तत्पर हूं। कबड्डी एक लोकप्रिय खेल है, जो ग्रामीण और शहरी इलाकों के लोगों को जोड़ता है। टाटा मोटर्स का टीम यू मुम्बा के साथ गठजोड़ खेल और टीम दोनों के साथ वाहन के मूल्यों को दोहराता है।

सुरभि कपूर को पीएच.डी.

उदयपुर। पेसिफिक विश्व विद्यालय के बैंकिंग विभाग की श्रीमती सुरभि कपूर को उनके द्वारा अहमदाबाद, गुजरात राज्य सहकारी बैंक के वित्तिय सहयोग से विभिन्न विकास योजनाओं का एक विस्तृत अध्ययन विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। श्रीमती सुरभि ने यह शोध डॉक्टर जे.पी. मिश्रा के निर्देशन में पूरा किया।

पृष्ठ दो का शेष

(रानीजी मेरे लेखन.....)

इस कार्य से पूर्व सन् 1972 में मेरी एक पुस्तक 'देवनारायण रो भारत' प्रकाशित हुई। इस संबंधी जानकारी के लिए मैं बगड़ावत वीरों से संबद्ध भीलवाड़ा क्षेत्र के कई गांवों में घूमा। उनके सबसे बड़े देव-मंदिर सवाईभोज भी गया और रात्रि विश्राम कर कई लोगों से कई तरह की जानकारी ली।

पहलीबार मैंने यह जाना कि बगड़ावतनामी चौईस भाइयों के उधर चौईस गांव बसे हुए हैं और हर गांव में संबंधित वीरवर की स्मृति में पूजा-स्थल बना हुआ है।

रानीजी से भेंट किये अर्सा हो गया था अत: सोच रहा था कि अबकी बार जब भी जयपुर जाना होगा, रानीजी से अवश्यमेव भेंट करूंगा। इतने में दूरदर्शन का कार्यक्रम हाथ आ गया फलस्वरूप मैं और डॉ. पल्लव दोनों साथ हो लिए। डॉ. पल्लव से मैंने अपना मंतव्य स्पष्ट कर दिया था कि इस बार जयपुर में कहीं नहीं ठहरकर बचे समय में रानीजी, डॉ. आर. सी. अग्रवाल और राजेन्द्रशंकर भट्ट साहब से मिलने का कार्य रखेंगे। डॉ. पल्लव ने भी इसे अपना सौभाग्य माना कि वे भी पहली बार इन तीन महान विभूतियों से भेंट कर सकेंगे।

20 जुलाई 2009 को सुबह जयपुर पहुंच स्टेशन के पास ही हमने स्नान आदि कर पोशाक बदली और चाय नाश्ता कर करीब नौ बजे अपना बेग अपने साथ लिए बनीपार्क स्थित रानीजी के निवास पर पहुंच गये। हमारे लिए यह भेंट बड़ी सार्थक और उतनी ही उपयोगी रही कारण कि रानीजी ने पचासों बीती बातों के साथ राजस्थानी भाषा की मान्यता को लेकर उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण प्रयत्नों की जानकारी से हमें अवगत कराया और कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण ही राजस्थानी संविधानिक भाषा बनने से रह गई। उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. नारायणसिंह भाटी जैसे महानुभावों का उल्लेख किया जिन्होंने राजस्थानी में श्रेष्ठ सृजन और उसकी मान्यता के लिए भरपूर कोशिश की और उन नेताओं को भी कोसा जो चाहते तो मान्यता का स्वर बुलंद कर वाहवाही ले सकते थे।

रानीजी की चालीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं जो राजस्थानी वीर संस्कृति के बहाने यहां के जनजीवन के जुड़ाव को बड़ी मधुरता के साथ दर्शित करती हैं। उन्होंने जो भी लिखा उसके अतीत और मूल तक का सबब हमारे सम्मुख प्रभावी एवं प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया। कहानियों, कथाओं, गीतों, गाथाओं के साथ ही उन्होंने प्रेम कथात्मक आख्यानों पर भी बड़ा हृदयस्पर्शी लेखन किया।

उनके लेखन की यह विशेषता है कि जिस विषय को वे स्पर्श करतीं, पाठक को बड़ी सरसता के साथ उसकी अंतरंग छवि के दृश्यलोक में पहुंचा देतीं। उनकी वर्णन शैली बड़ी रोचक, मधुर तथा सुभाषिनी थी। अपने लेखन में उन्होंने जो संदर्भ, सूत्र और संकेत दिये उनके आधार पर राजस्थान की भाषा, संस्कृति, इतिहास, धर्म, अध्यात्म तथा पौरूष की वीरोचित जीवनशैली पर कई तरह से शोधानुसंधान किया जाना चाहिये, यह आज के समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पक्ष भी लगता है।

देवगढ़ ठिकाने में 1916 में रानीजी का जन्म हुआ। यह ठिकाना मेवाड़ के सौलह महत्वपूर्ण और अग्रगामी ठिकानों में शुमार था। इनके पिता रावत विजयसिंह और माता नंदकुंवर अपने ठिकाने के जागीरदार घराने के लोकप्रिय शासक थे। रानीजी की शिक्षा रावले में ही हुई। शिकार और घुड़सवारी के शौक के साथ-साथ रानीजी ने पं. पन्नालाल से संस्कृत, मुंशी जफर अली से उर्दू तथा देवीचरणसिंह से अंग्रेजी का शिक्षण लिया किंतु उन पर सर्वाधिक प्रभाव मोडू दादा का पड़ा जो उन्हें मेवाड़ी भाषा में प्रसिद्ध लोकनायकों तथा नायिकाओं से संबंधित कहानियों, लम्बी वार्ताओं तथा गीत, गाथाओं का मौखिक खजाना लिए थे।

यही नहीं, राज परिवार होने के कारण वार-त्यौहारों, विशिष्ट अवसरों एवं खुशी के मौकों पर गाने, बजाने तथा अन्य भांति के अनुरंजन प्रदाताओं का जो जुड़ाव होता, उनका भी रानीजी के मन पर गहरा असर पड़ा। रानीजी द्वारा लिखित राजस्थानी लोकगीत, मूमल, गजबण, राजस्थानी संस्कृति, अमोलक बातां, के रे चकवा वात, हूंकारो दो सा जैसी कृतियां साक्षी हैं। इन कृतियों में मेवाड़ी भाषा का मिठास और यहां की संस्कृति की विविधरूपा छटाओं का रानीजी ने जिस सरलता और संस्कृतिमय सुघड़ता के साथ दरसाव किया वह प्रत्येक पाठक को चित्रपट सा सुख-रंजन देता दर्शित होता है।

रानीजी बड़ी मधुर भाषी तथा स्नेह-सौजन्य वाली लेखिका थीं। वे अपनों से हर समय मेवाड़ी में ही बात करती थीं। राजनीति में भी उनकी गहरी दिलचस्पी और अच्छी पैठ थी किन्तु उनका लेखिका का रूप ही मुझे अधिक प्रभावी लगा। उनके साथ मैंने मेवाड़ में कई जगहों की यात्राएं कीं। कई क्षीण होते कलारूपों और कलाकारों की समस्याओं पर कई गोष्ठियों में, कई विद्वानों के बीच हमारी-उनकी भेंट बड़ी दिलचस्प और उपलब्धिमूलक रही।

उनकी जानकारी बड़ी गहरी तथा सकारात्मक सोच लिए थी। कई बार, कई जगह मैंने महसूस किया कि वे यदि राजनीति में नहीं होतीं तो राजस्थान के सांस्कृतिक लोक और लोक सांस्कृतिक क्षेत्र को उनकी देन कई गुना अधिक अच्छी, रंगतदार तथा स्थायी महत्व की मूल्यवान होती।

उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही अनुकरणीय थे। राजघराने और राजनीति के महत्वपूर्ण दायित्वों से जुड़ी रहने पर भी इनमें उसकी कोई गंध, कोई ठसक और हमतम नहीं थी। एक अच्छी खुशनुमा लम्बी आयु प्राप्त कर वे अन्तत: 24 मई 2014 को हम सबसे विदा हो गई।

हिन्दुस्तान जिंक़ का रिकॉर्ड उत्पादन

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ के अखिलेश जोशी ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2016 में कम्पनी का रिकॉर्ड निष्पादन रहा है। वे कार्यालय सभागार में कंपनी की 50वीं वार्षिक बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शेयरधारकों को बताया कि कंपनी के भूमिगत खनन का कार्य गत वर्ष 28 प्रतिशत था जो बढ़कर 40 प्रतिशत हो गया है और अगले वर्ष इसके 60 प्रतिशत होने की उम्मीद है।

जोशी ने बताया कि कम्पनी के सघन खनिज समन्वेषण कार्यकलाप के फलस्वरूप पिछले कई वर्षों में आरक्षित भंडार एवं संसाधन आधार को और सुदृढ़ बनाया है। वर्ष के दौरान आरक्षित एवं संसाधन भण्डार में 25.3 मिलियन मी. टन की वृद्धि हुई जो 10.5 मिलियन मी. टन के अवक्षय से पूर्व थी। इस प्रकार 31 मार्च, 2016 को इसमें और इजाफा करते हुए 389.9 मिलियन मी. टन आरक्षित एवं संसाधन भण्डार है जिनमें 36.1 मिलियन मी. टन जस्ता - सीसा धातु तथा 1,007 मिलियन आउन्ज चाँदी विद्यमान है। खान का समग्र जीवन 25 + वर्ष है।

जोशी के अनुसार वर्ष के दौरान उत्पादन लागत में कमी की गई। दक्षताओं का उन्नयन किया गया। खानों तथा प्रद्रावकों की उत्पादकता में सुधार किया गया तथा कंपनी की विस्तारशील परियोजनाओं में खान विकास को चहुँमुखी गति प्रदान की गई। वर्ष के दौरान खनिज धातु उत्पादन 889 किलो टन यानि आंशिक तौर पर अधिक था जो अधिक अयस्क उत्पादन के कारण रहा। वर्ष के दौरान जस्ता, सीसा एवं चाँदी धातुओं का उत्पादन गत वर्ष की तुलना में क्रमश: रिकार्ड स्तर तक यानि 5, 33 तथा 58 प्रतिशत तक बढ़ा जो अधिकतम खनिज धातु की उपलब्धता के कारण और पुख्ता हो पाया है।

रामपुरा-अगूचा भूमिगत खदान का सहजीकरण अब गति पकड़ चुका है। मार्च माह में डिक्लाइन विकास अब तक का सर्वाधिक रहा है। तिमाही के दौरान विकसित निखनन स्थलों से अयस्क उत्पादन आरंभ हो गया तथा पेस्ट भरण संयंत्र भी चालू किया जा चुका है। मुख्य शाफ्ट को गहरा करने की परियोजना में अब पूरा ध्यान 950 मीटर की कुल गहराई में से 860 मीटर तक करने पर दिया जा रहा है। रामपुरा-अगूचा विवृत्त खान में और 50 मीटर की अतिरिक्त गहराई करने का कार्य सन्तोषपूर्वक चल रहा है। सिन्देसर खुर्द खदान तथा कायड़ खदान योजना निर्धारित अवधि से पूर्व ही पूर्ण हुई तथा इनमें से क्रमश: 3 मीलियन टन प्रतिवर्ष एवं 1 मिलियन टन प्रतिवर्ष की उत्पादन क्षमता अर्जित कर ली गई। जोशी ने कहा कि वर्ष के दौरान कम्पनी ने शिक्षा, संपोषणीय आजीविका, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता, खेल एवं संस्कृति, पर्यावरण, सामुदायिक विकास तथा सामुदायिक संपदा सर्जन जैसे क्षेत्रों पर पूरा ध्यान देते हुए विभिन्न निगमित सामाजिक दायित्वों पर 63.25 करोड़, रूपए का निवेश किया। ज्ञातव्य रहे कि कम्पनी इस वर्ष को स्वर्ण जयन्ति वर्ष के रूप में मनाया है, निदेशक मण्डल ने कंपनी के शेयरधारियों के लिये 30 मार्च, 2016 को 1200 प्रतिशत का विशिष्ट लाभांश 2 रूपये के प्रत्येक एक शेयर पर 24 रूपये घोषित किया है जो भारत के निजी क्षैत्र के उपक्रम में सर्वाधिक एकल लाभांश हैं।

बैठक में हिन्दुस्तान जिंक़ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं पूर्णकालिक निदेशक सुनील दुग्गल, मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता, कंपनी के निदेशक मण्डल में निदेशक सुधीर कुमार, अरूण टोडरवाल, महामहिम राष्ट्रपति के प्रतिनिधि सतीश एस कोहली तथा कंपनी सचिव राजेन्द्र पण्डवाल उपस्थित थे।

गोदरेज अप्लायंसेज टीके की नवीनतम रेंज लॉन्च

उदयपुर। गोदरेज अप्लायंसेज ने यूके स्थित श्योर चिल कंपनी के साथ मिलकर श्योर चिल तकनीक युक्त मेडिकल रेफ्रिजरेटर्स लॉन्च किया। इन विशेषीकृत रेफ्रिजरेटर्स को खास तौर पर इसलिए डिजाइन किया गया ताकि लंबे समय तक बिजली की कटौती होने के बावजूद टीकों और रक्त के लिए एकदम सही शीतलन समाधान उपलब्ध कराने की मुख्य आवश्यकता पूरी की जा सके। तेरह दिनों के होल्डओवर समय एवं मात्र 2.5 घंटे प्रति दिन की विद्युत आवश्यकता के साथ, इस रेंज को परमसंकट की स्थितियों को संभालने के लिए डिजाइन किया गया। जमशेद गोदरेज, प्रबंध निदेशक एवं चेयरमैन, गोदरेज ऐंड बॉयस मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी लि. ने कहा कि गोदरेज एप्लायंसेज ने छह नये मॉडल्स की रेंज को लॉन्च कर अपने मेडिकल पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। नई लाईट सीरीज को की होल्डओवर अवधि तीन दिन है, जिससे किसी भी तरह की अचेत कालावधि में उत्पाद की सर्विसिंग एवं इसे ठीक करने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। सरकार द्वारा अंगीकृत इंद्रप्रस्थ प्रोग्राम के मिशन के तहत 90 प्रतिशत प्रतिरक्षण कवरेज की दिशा में सरकारी प्रयासों में हाथ बंटाने के उद्देश्य से, गोदरेज अप्लायंसेज ने रिमोट हेल्थ सेंटर्स के लिए संयुक्त फ्रीज फ्रीजर के रूप में खोजपरक एकल टीका भंडारण उपकरण भी विकसित किया है।

वण्डर सीमेण्ट भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. आरके नगर, निम्बाहेड़ा को वर्ष 2015-16 में शिक्षा के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय योगदान हेतु बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित हुए राज्य स्तरीय 22वें भामाशाह सम्मान समारोह-2016 में सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल और राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी से कम्पनी के मुख्य वित्त अधिकारी जयदीप शाह ने यह सम्मान ग्रहण किया। वण्डर सीमेंट को यह सम्मान प्राथमिक, माध्यमिक एवं भाषा विभाग राजस्थान सरकार द्वारा स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्बाहेड़ा एवं भदेसर पंचायत समिति के शौचालय विहीन 44 राजकीय विद्यालयों में 50 शौचालय इकाइयों के निर्माण एवं अन्य राजकीय विद्यालयों में आधारभूत ढांचागत निर्माण कार्यों में व्यय 96 लाख 47 हजार रुपये के सहयोग हेतु प्रदान किया गया।

वण्डर सीमेण्ट के ओ.एस.डी. (भूमि एवं सी.एस.आर.) एस. एल. वर्मा ने बताया कि हमारा प्रतिष्ठान प्रारम्भ से ही सामुदायिक विकास की गतिविधियों में अग्रणी रहा है। औधोगिक सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत वण्डर सीमेण्ट द्वारा कई प्रकार की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं, जिसमें शैक्षणिक गतिविधियों को प्रमुखता से लागू किया जा रहा है। इस क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्यों के लिये पूर्व में वर्ष 2013 एवं 2015 में वण्डर सीमेण्ट को यह सम्मान दिया जा चुका है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।